अध्याय : पाँच

अध्याय : पाँच

'आलोचना' के विशेषांक : महत्त्व और वैशिष्ट्य

पिछले अध्यायों में स्पष्ट किया जा चुका है कि 'आलोचना' पत्रिका अपने प्रकाशन-संपादन के लंबे अंतराल में कई 'संपादकीय विवेक' से होकर गुजरी है। शिवदान सिंह चौहान, धर्मवीर भारती और उनका सहयोगी मंडल, नंददुलारे वाजपेयी से होते हुए वह नामवर सिंह के संपादकत्व में आती है। प्रत्येक संपादक ने अपने संपादन में कुछ विशेषांक, अथवा किसी विषय पर विशेष-सामग्री आदि का प्रकाशन किया है। जिसमें 'आलोचना' पत्रिका के संस्थापक-संपादक शिवदानसिंह चौहान ने अपने संपादन के दो चरणों में कुछ महत्वपूर्ण विशेषांकों'इतिहास विशेषांक' (पूर्णांक-05 और 06) 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य' (पूर्णांक-33, 34, 35, 36 तथा 37) का संपादन किया है। धर्मवीर भारती मंडल ने 'आलोचना विशेषांक (पूर्णांक-09) तथा 'उपन्यास विशेषांक' (पूर्णांक-13) का संपादन किया। नंददुलारे वाजपेयी के संपादन में 'नाटक विशेषांक (पूर्णांक-19), काव्यालोचन विशेषांक (पूर्णांक-25 एवं 26) प्रकाशित हुआ। नामवर सिहं द्वारा संपादित 'आलोचना' पत्रिका के लंबे दौर में भी कई विशेषांक, 'स्मृति अंक', 'विशेष समग्री' आदि का संपादन-प्रकाशन हुआ है। इस अध्याय में यही देखना है कि नामवर सिंह ने आलोचना पत्रिका का संपादन करते हुए, किन रचनाकारों, आलोचकों और चिंतकों पर विशेषांक आयोजित किए; किन विषयों पर विशेषांक प्रकाशित किए गए? इसके अतिरिक्त, किन रचनाकारों, आलोचकों पर 'विशेष सामग्री' अथवा 'स्मृति अंक' आदि का आयोजन किया गया है?? तथा किन विषयों पर 'विशेष सामग्री' आदि का प्रकाशन हुआ है?? इस अध्याय में यह देखना अतिआवश्यक है कि नामवर सिंह संपादित उन विशेष अंकों, विशेष सामग्री आदि के प्रकाशन एवं आयोजन का परिप्रेक्ष्य क्या है? क्या 'किसी रचनाकार' या किसी विषय पर विशेष आयोजन सिर्फ विशेषांक आदि निकालने के लिए किए गए हैं अथवा

उन आयोजनों के पीछे कोई ठोस आधार भी है? इस अध्याय में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि नामवर सिंह 'आलोचना' में किसी विशेष रचनाकार अथवा विषय पर विशेषांक अथवा विशेष आयोजन क्यों करते हैं?? क्या इसलिए करते हैं, जन्मशताब्दी या पुण्यतिथि आ पड़ी है। परंपरा का निर्वाह करना है इसलिए एक विशेष अंक संपादित किया जाए? या अमुक रचनाकार उपेक्षित है इसलिए इस पर विशेषांक आयोजित किया जाना है? अथवा उन रचनाकारों या आलोचकों-चिंतकों पर विशेषांक आदि का आयोजन साहित्य की परंपरा में उनकी महत्ता का प्रतिपादन करने के लिए किया गया है; या 'कैनन-निर्माण' प्रक्रिया में उनका 'स्थान-निर्धारण' को लेकर किया गया है?? यदि जन्मशताब्दियों पुण्यतिथियों पर विशष अंकों का आयोजन किया गया है तो क्या उसमें आलोचनात्मक अवदान पर भी चर्चा हुई है या वहाँ श्रद्धा-विगलित पूज्यभाव विद्यमान है? वस्तुतः इस अध्ययन में यह देखना है कि 'आलोचना' पत्रिका के विशेषांकों के संपादन के पीछे का परिप्रेक्ष्य क्या है, उन रचनाकारों 'आलोचकों पर ही क्यों वह अंक आयोजित किया गया है? उन विशेषांकों का महत्व आज किस रूप में हमारे सम्मुख आता है??

'आलोचना' पत्रिका के विशेषांक और उसके महत्व आदि को स्पष्ट करने के लिए इस अध्याय को दो उपशीर्षकों में बाँटकर देखना होगा

1. प्रमुख रचनाकारों-आलोचकों एवं चिंतकों तथा विविध साहित्यिक प्रवृत्तियों पर विशेष रूप से आयोजित अंक या प्रमुख विशेषांक।
2. प्रमुख रचनाकारों, आलोचकों एवं अन्य साहित्यिक प्रवृत्तियों पर कुछ विशेष सामग्री का प्रकाशन या आलोचना के महत्वपूर्ण आयोजन। उपर्युक्त विभाजन अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से किया गया है जिससे 'आलोचना' पत्रिका में प्रकाशित विशेषांकों एवं विशेष सामग्री के अध्ययन का परिप्रेक्ष्य पूर्णरूप से स्पष्ट हो सके।

5.1 'आलोचना' पत्रिका के प्रमुख विशेषांक

नामवर सिंह ने अपने संपादन में 'आलोचना' पत्रिका में हिंदी भाषा एवं साहित्य के कई कवियों, लेखकों, आलोचकों, पर विशेषांक आयोजित किए हैं। इसके अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं एवं पश्चिमी चिंतकों पर भी उन्होंने विशेषांक प्रकाशित किए हैं जिनका अध्ययन एवं महत्व का प्रतिपादन आगामी पृष्ठों पर किया गया है।

मुक्तिबोध पर केंद्रित अंक (नवांक-06-जुलाई-सितं., 1968)

'आलोचना' पत्रिका का संपादन करते हुए नामवर सिंह ने सबसे पहला विशेषांक स्वर्गीय गजानन माधव मुक्तिबोध पर आयोजित किया। यह विशेष अंक स्वर्गीय मुक्तिबोध की इक्यावनवीं जन्मतिथि पर आयोजित किया गया था। इस अंक में मुक्तिबोध की कविता, कहानी, आलोचना आदि के साथ उनके जीवन पर भी कुछ लेख, संस्मरण आदि का प्रकाशन किया गया है। स्वयं मुक्तिबोध की 'विक्षुब्ध बुद्धि के मारक स्वर' शीर्षक कविता को इस अंक में प्रकाशित किया गया है। इस अंक में नेमिचंद्र जैन को लिखे गए मुक्तिबोध के पत्रों को भी प्रकाशित किया गया है। इसके अतिरिक्त हरिशंकर परसाई का एक संस्मरण भी प्रकाशित है। श्रीकांत वर्मा 'मुक्तिबोध की सार्थकता' शीर्षक लेख में मुक्तिबोध की महत्ता का प्रतिपादन करते हैं। आग्नेयश्का सोनी ने मुक्तिबोध के कहानीकार रूप का अध्ययन किया है। विष्णु खरे 'अंधेरे में' तथा उनकी अन्य कविताओं के संदर्भ में उनकी काव्यात्मकता की पड़ताल करते हैं। इसी अंक में 'मुक्तिबोध और अज्ञेय के काव्य-बिंब' का तुलनात्मक अध्ययन रणजीत और रशाद अब्दुल वाजिद ने प्रस्तुत किया है। मुक्तिबोध पर केंद्रित इस अंक का विशेष आकर्षण-'कविता और राजनीति' विषय पर 'संवाद' का आयोजन है। यह संवाद मुक्तिबोध की जन्मतिथि के अवसर पर उनके सम्मान में आयोजित किया गया था। वस्तुतः मुक्तिबोध की स्मृति में आयोजित इस 'संवाद' का आधार यही था कि मुक्तिबोध की कविता की समझ तत्कालीन राजनीतिक परिवेश को समझे बगैर अधूरी होगी तथा

उस परिप्रेक्ष्य की समझ कविता और राजनीति के संबंधों की स्वस्थ समझ पर टिकी हुई है। मुक्तिबोध पर केंद्रित इस अंक में वैसे तो उनके संपूर्ण व्यक्तित्व-कृतित्व पर सामग्री प्रस्तुत की गई है। उनके अध्ययन का परिप्रेक्ष्य भी 'संवाद' को आयोजित करके स्पष्ट किया गया है। किंतु, नवांक-14 में भी मुक्तिबोध पर कुछ विशेष आलेख-निबंध प्रकाशित किए गए हैं जिनमें इंद्रनाथ मदान ने 'मुक्तिबोधः मूल्यांकन परिचर्चा' शीर्षक शोधालेख तथा जगदीश शर्मा के दो शोधपरक आलेखों'मुक्तिबोध का आत्मसंघर्ष : अपरपक्ष', तथ्य 'मुक्तिबोध शुद्ध प्रगतिवादी थे', जैसे लेखों की पूरकसामग्री को मुक्तिबोध पर केंद्रित अंक में मिला लेने पर मुक्तिबोध की एक मुकम्मिल छवि हमारे सम्मुख स्पष्ट होकर आती है।

'आलोचना' पत्रिका का यह विशेषांक नामवर सिंह ने क्यों संपादित किया अपने आत्मकथ्य में नामवर सिंह इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहते हैं कि''उन्हीं दिनों 'मैं' 'कविता के नए प्रतिमान' पुस्तक लिख रहा था जिसमें आधुनिक कविता का कैनन बदलने का सवाल मेरे सामने था। अज्ञेय और नई कविता की इतनी धूम थी कि मुक्तिबोध जैसा महत्वपूर्ण कवि उपेक्षित था।... मुक्तिबोध पर विशेषांक निकाला। मुक्तिबोध पर किताब तो मैंने अलग से लिखी ही लेकिन विशेषांक पहले निकाला था।... इस तरह मैंने कविता में कैनन को बदलने की कोशिश की।''[1] स्पष्ट है कि नामवर सिंह ने मुक्तिबोध पर अपनी दृष्टि मुक्तिबोध के मूल्यांकन पर केंद्रित की अर्थात् उन्हें उपेक्षित रखनेवाली दृष्टियों का प्रत्याख्यान किया। 'आलोचना' पत्रिका के माध्यम से उन्होंने ''नई कविता'' के केंद्र में मुक्तिबोध को लाकर खड़ा किया। यह कार्य उन्होंने सिर्फ मुक्तिबोध पर केंद्रित अंक के माध्यम से ही नहीं किया, बल्कि 'आलोचना' पत्रिका के कई अन्य अंकों में भी उन पर लेख, निबंध, शोध-पत्र आदि भी प्रकाशित करते रहे। कहा जा सकता है कि 'आलोचना' पत्रिका मुक्तिबोध को 'हिंदी कविता के कैनन' में स्थान दिलाने का माध्यम बनी।

ग़ालिब की याद में आयोजित विशेषांक (नवांक-08-जनवरी-मार्च, 1969 ई.)

नामवर सिंह के संपादकीय विवेक की महत्ता का उद्घाटन तब होता है, जब वह न केवल हिंदी के कवियों-रचनाकारों पर विशेषांक का आयोजन करते हैं, बल्कि उर्दू भाषा के प्रसिद्ध शायर 'असदुल्लाह ख़ान 'ग़ालिब' पर 'आलोचना' पत्रिका का एक पूरा अंक आयोजित करते हैं। नवांक-08 ग़ालिब की सौवीं पुण्यतिथि पर आयोजित अंक है। यह अंक न केवल ग़ालिब की स्मृति में आयोजित है बल्कि दुनिया की किसी भाषा के बड़े कवि के प्रति सम्मान में आयोजित है। इस अंक की सामग्री को देखकर ही उसकी विविधता का पता चलता है। इसके साथ ही, इस अंक के लेखों और निबंधों आदि के प्रकाशन के पीछे किए गए परिश्रम का पता तब लगता है, जब हम यह देखते हैं कि इस अंक के अधिकांश लेख आदि उर्दू से हिंदी में अनूदित एवं लिप्यंतरित करके प्रकाशित किया गया है, जिससे हिंदी जगत को भी एक बड़े शायर से परिचित कराया जा सके। उसके महत्व का बोध कराया जा सके। इस अंक में कैलाश वाजपेयी की 'एक ख़त ग़ालिब के नाम' शीर्षक कविता प्रकाशित है। यह वही कविता है जिसके कुछ अंशों को भारत सरकार ने आपत्तिजनक माना था।[2] शमशेरबहादुर सिंह का महत्त्वपूर्ण आलेख 'ग़ालिब मेरी दृष्टि में' इस अंक में प्रकाशित है। शमशेरबहादुर सिंह द्वारा ख़्वाज़ा अहमद फ़ारूक़ी के लेख का अनुवाद 'ग़ालिब की महत्ता' शीर्षक से प्रकाशित है। अहमद हुसैन 'गालिब की आधुनिकता' शीर्षक लेख में ग़ालिब की आधुनिकता की पड़ताल करते हैं। कुँवर मोहम्मद अशरफ़ ने ग़ालिब के इतिहासकार रूप पर 'ग़ालिब और सन सत्तावन की राज्य क्रांति' शीर्षक लेख में विचार करते हैं। इस लेख का अनुवाद भी शमशेरबहादुर सिंह ने किया है। नईम अहमद ने ग़ालिब : अंतर्विरोधों के बावजूद' शीर्षक लेख में ग़ालिब के अंतर्विरोधों से उनकी वास्तविक छवि तलाशने का काम करते हैं। इस लेख का अनुवाद असग़र वज़ाहत और सुहैला नश्तर ने किया है। विश्वनाथ त्रिपाठी का लेख 'जटिल भावाभिव्यक्ति के कवि ग़ालिब' शीर्षक से प्रकाशित है। नूरूल हसन अंसारी 'ग़ालिब की फ़ारसी कविता' पर विचार

व्यक्त करते हैं। क़मर रईस 'ग़ालिब के व्यंग्य और हास्य' पर अपना मत प्रकट करते हैं। प्रसिद्ध कथाकार क़ाज़ी अब्दुल सत्तार ने 'ग़ालिब के गद्य के नए आयाम' का उद्घाटन किया है। फ़र्रुख़ जलाली साहब 'ग़ालिब और सर सैयद' को एक साथ रखकर अध्ययन करते हैं। रियाज पंजाबी का लेख 'तुम्हें हम वली समझते' शीर्षक से प्रकाशित है। राजेंद्र शर्मा हिंदी भाषा और साहित्य में ग़ालिब संबंधी अध्ययन-चिंतन किस प्रकार का है उसका एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन'ग़ालिबः हिंदी में' शीर्षक से प्रस्तुत करते हैं।

वस्तुतः यह अंक अत्यंत विचारोत्तेजक तब बन पड़ा है जब हिंदी और उर्दू भाषा के रचनाकार-आलोचक एक बड़े कवि की कविता का मर्म और उसका परिप्रेक्ष्य उद्घाटित करते हैं। ध्यान देने की बात है कि ग़ालिब की कविता के महत्त्व का उद्घाटन उस दौर में किया गया है जब 1960 ई. के आसपास आधुनिकतावादी चिंतन की एक लहर हिंदी साहित्य में चली थी। इसकी स्पष्ट छाप कैलाश वाजपेयी की कविता में तथा स्वयं शमशेरबहादुर सिंह के इस वक्तव्य में भी विद्यमान है कि"ग़ालिब खुद एक बड़ा हीरो है अपनी व्यापकता के केंद्र में जो कि स्पष्ट एक आधुनिक चीज है। व्यक्ति का निर्बाध अपनापन। हर बात में अपने व्यक्तित्व को अपने निजी दृष्टिकोण को रखना। मैं खुद किस पहलू से सोचता हूँ किस ढंग से महसूस करता हूँ, यह उसके लिए महत्त्व की बात है।... उसकी मुसीबतें, उसका संघर्ष, जिसको वह कभी छिपाता नहीं... उसके शब्दों में हू-ब-हू आधुनिक-सा लगता है। अजब बात है। उसमें आज के आधुनिक साहित्यकार की-सी पूरी तड़प और वेदना के बीच एक तटस्थ, यथार्थवादी दृष्टि है।"[3] 'अहमद हुसैन' तो 'ग़ालिब की आधुनिकता' की पड़ताल इसी शीर्षक से प्रकाशित निबंध में करते हैं। नामवर जी की संपादकीय प्रतिभा की दृष्टि से इस तथ्य की ओर ध्यान अवश्य ही जाता है कि 'आलोचना' पत्रिका अपनी साहित्यिक परंपरा का मूल्यांकन आलोचनात्मक दृष्टि से करती है, उस रचनाकार या लेखक के अंतर्विरोधों एवं समग्र कृतित्त्व के आधार पर उनका मूल्यांकन करने का कार्य करती है। इसी

अंक में नईम अहमद ने 'मिर्ज़ा ग़ालिब अंतर्विरोधों के बीच' शीर्षक लेख में तथा रियाज़ पंजाबी ने 'तुम्हें हम वली समझते' शीर्षक आलेख में उनके अंतर्विरोधों को उद्घाटित करते हुए ग़ालिब की वास्तविक छवि को पकड़ने की कोशिश करते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं है कि अपनी परंपरा के प्रति आलोचनात्मक रवैया अपनाना तथा किसी रचनाकार की छवि उसकी समग्रता में से, अंतर्विरोधों से उद्घाटन करना, कहीं ज़्यादा कठिन कार्य है। नामवर सिंह 'आलोचना' पत्रिका के माध्यम से विभिन्न रचनाकारों पर विशेषांक आदि आयोजित कर उसकी वास्तविक छवि को प्राप्त करने की कोशिश करते हैं।

लेनिन पर केंद्रित अंक (नवांक-13. अप्रैल-जून, 1970)

नामवर सिंह ने 'आलोचना' पत्रिका का नवांक- 13 रूसी क्रांति के अगुआ लेनिन की जन्मशती के उपलक्ष्य में केंद्रित किया था। यह अंक सिर्फ इसीलिए नहीं महत्त्वपूर्ण है कि यह लेनिन पर आयोजित है. बल्कि इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है लेनिन को अब तक क्रांतिकारी ब्रांड के रूप में ही ग्रहण किया जाता था, और उनकी महत्त्वपूर्ण कृति 'पार्टी, साहित्य और समाजवाद' को रचनात्मक साहित्य के संदर्भ में उल्लिखित करते हुए साहित्य और साहित्यकार को पार्टीबद्ध लेखन के लिए मजबूर करने के अर्थ में ही ग्रहण किया जाता था। जबकि इस अंक में प्रकाशित लेखों-निबंधों जैसे : भीष्म साहनी के लेख 'लेनिन और साहित्य', अर्न्स्ट फिशर के लेख का अनुवाद 'पार्टी, साहित्य और समाजवाद', ई. चेलिशेव के लेख 'भारतीय साहित्य में लेनिन', तथा लेनिन के दो पत्र गोर्की के नाम, और लेनिन द्वारा एक पुस्तक की समीक्षा' से लेनिन का एक रूप साहित्य-सिद्धांतकार के रूप में निकल कर आता हुआ देखा जा सकता है। इसी अंक में डेविड एन. मार्गोलीज के क्रिस्टोकर कॉडवेल के मार्क्सवादी कला चिंतन के विकास में अवदान पर लिखे गए महत्त्वपूर्ण आलेख का अनुवाद 'काडवेल और साहित्य की सामाजिक वृत्ति' शीर्षक से प्रकाशित है। इसी अंक में इस्तवान साइमन एवं इर्विन जित्यानि द्वारा जार्ज लूकाच का लिया गया इंटरव्यू का

अनुवाद भी प्रकाशित है। इसी अंक में रूसी भाषी हिंदी विद्वान ई. चेलिशेव द्वारा सुमित्रानंदन पंत पर लिखित पुस्तक की समीक्षा जो नामवर सिंह द्वारा की गई है 'लेनिन जन्मशती पर एक आलोचनात्मक उपहार' शीर्षक से प्रकाशित है। विश्वनाथ त्रिपाठी बनारसीदास चतुर्वेदी के अंतिम दिनों में लेनिन की ओर आकर्षण का उल्लेख चतुर्वेदी जी की पुस्तक 'नीलकंठ गोर्की' की समीक्षा में करते हैं।

लेनिन पर आयोजित जब इस अंक का संपादकीय जो कि क्रांतिकारी साहित्य, क्रांतिकारी स्वच्छंदतावाद तथा क्रांति की समस्या एवं छापामार युद्ध में टूटपूँजियाँ मध्यवर्ग की भूमिका आदि पर केंद्रित है और जब इसे भारतीय परिप्रेक्ष्य में नक्सलबाड़ी आंदोलन के उभार के परिप्रेक्ष्य में रखकर देखते हैं और उसकी सफलता-असफलता की पड़ताल करते हैं। तब इस अंक की महत्ता का पता चलता है। ध्यान दें तो यह अंक मार्क्सवादी साहित्य एवं कला-चिंतन के नवमार्क्सवादी चिंतन के परिप्रेक्ष्य से प्रेरित अंक है, जिसे मोतीलाल रैना मार्क्सवादी चिंतन की दूसरी परंपरा का नाम देते हैं।[4]

जार्ज लूकाच की स्मृति में केंद्रित अंक (नवांक-18 जुलाई-सितं., 1971)

मार्क्सवादी कला एवं साहित्य संबंधी चिंतन की नवमार्क्सवादी अथवा 'मार्क्सवादी चिंतन की दूसरी परंपरा' जिसे कहा जाता है, उसके प्रतिपादक आचार्यों में जार्ज लूकाच की गणना की जाती है। जब भाषावादी-रूपवादी साहित्य चिंतन के दबाव में मार्क्सवादी साहित्य-चिंतन अपनी राह नहीं बना पा रहा था, उस समय जार्ज लूकाच की मान्यताओं ने रूपवादी-भाषावादी चिंतन के विरुद्ध लड़ने की शक्ति प्रदान की। नामवर सिंह अपने प्रेरणा स्रोतों में जार्ज लूकाच की गणना करते हैं।[5] इस अंक की संपादकीय 'जार्ज लूकाच' पर केंद्रित है, इसके अतिरिक्त इस अंक में 'जार्ज लूकाच की जीवन की प्रमुख घटनाएँ', और उनका विवरण प्रकाशित किया गया है। इसी अंक में 'जार्ज लूकाच के साथ एक वार्ता' का प्रकाशन किया गया है। जार्ज लूकाच के एक लेख का अनुवाद भी

'कला और वस्तुपरक सत्य' शीर्षक से प्रकाशित है। 'आलोचना' ने लूकाच' पर विशेषांक का आयोजन कर मार्क्सवादी साहित्य एवं कला-चिंतन के इस महान चिंतक के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है।

आज की स्थिति में प्रगतिशीलता-विषय पर केंद्रित अंक (नवांक- 29 अप्रैल-जून, 1974)

प्रगतिशील लेखन के आरंभ के उपरांत प्रत्येक दौर में प्रगतिशीलता की अवधारणा को लेकर बहस चलती रही है। प्रगतिशील लेखक संघ के आरंभिक दिनों में प्रगतिशीलता की अवधारणा को लेकर जमकर बहस हुई है, इसे डॉ0 रामविलास शर्मा और शिवदान सिंह चौहान के बीच प्रगतिशीलता की अवधारणा को लेकर हुई बहस में देख सकते हैं। स्पष्ट है कि 1974 ई. में 'प्रगतिशीलता का स्वरूप क्या हो?? प्रगतिशील साहित्य किसे कहें?? वस्तुतः इसी की समस्या से निपटने के लिए 'आज की स्थिति में प्रगतिशीलता' शीर्षक से 'आलोचना' पत्रिका ने एक 'संवाद' का आयोजन किया। इस 'संवाद' में विषय-प्रर्वतन मुरलीमनोहर प्रसाद सिंह ने 'प्रगतिवाद : मूल्य और आंदोलन नए संदर्भ में' शीर्षक लेख से किया। जिसके उत्तर में विश्वनाथ त्रिपाठी, शिवमंगल सिद्धांतकर डॉ0 माहेश्वर, सुरेंद्र तिवारी, भीष्म साहनी, गंगाप्रसाद विमल, सुरेंद्र चौधरी, डॉ0 मुहम्मद हसन, सुधीश पचौरी, शमशेरबहादुर सिंह, राजीव सक्सेना, ने पक्ष या विपक्ष में अपने वक्तव्य दिए हैं। इसी अंक में रेखा अवस्थी का एक लेख 'प्रगतिवाद : युग व्याप्ति तथा अंतर्विरोध' शीर्षक से प्रकाशित है। वस्तुतः इस अंक के निहितार्थों को 1974-75 ई. के दौर के संदर्भों में समझा जा सकता है, कहने की ज़रूरत नहीं है कि 1975 में भारत में आपातकाल लागू कर दिया गया था। दूसरी तरफ मार्क्सवादी खेमे में अतिवादिता की प्रबलता दिखाई पड़ रही थी, अपने संपादकीय वक्तव्य में नामवर सिंह इसकी कड़ी आलोचना करते हैं। यह अंक इस परिचर्चा और संपादकीय के कारण मार्क्सवादी आलोचना में अपनी महत्ता को स्थापित करता है।

धूमिल विशेषांक (नवांक-33. अप्रैल-जून, 1975)

साठोत्तरी कविता जिसे अकविता, भूखी पीढ़ी, युवा कविता आदि नामों से भी जाना जाता है, उसके केंद्र में 'धूमिल' की उपस्थिति रही। नामवर सिंह धूमिल को 'अकविता' की महत्त्वपूर्ण देन मानते हैं।[6] इस युवा विद्रोही कवि की असामयिक मृत्यु पर श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए नामवर सिंह ने 'आलोचना' पत्रिका का विशेषांक आयोजित किया। धूमिल पर आयोजित यह अंक धूमिल के व्यक्तित्त्व-कृतित्त्व के मूल्यांकन के लिए एक सार्थक पहल है। यह अंक धूमिल पर शोध-कार्य करने वाले प्रत्येक शोधार्थी के लिए अनिवार्य अंक की हैसियत रखता है। इस अंक में काशीनाथ सिंह का लेख- 'विपक्ष का कवि धूमिल' शीर्षक से प्रकाशित है। विश्वनाथ त्रिपाठी ने 'भाषा की रात से जूझता कवि : धूमिल' शीर्षक लेख में, गोविंद उपाध्याय ने 'धूमिल कवि-कर्म का विकासक्रम तथा कुछ संस्मरण' शीर्षक लेख में, रामकृपाल पांडेय का लेख 'सार्थकतावादी कवि धूमिल का काव्यालोक' तथा रामबक्ष ने 'धूमिल : व्यवस्था से विद्रोह और विद्रोह की व्यवस्था' शीर्षक आलेख में धूमिल का मूल्यांकन करने का प्रयास करते हैं। इस अंक में विनोद भारद्वाज को लिखे गए 'धूमिल के पत्र' भी प्रकाशित हैं। धूमिल के छोटे भाई 'कन्हैया पांडेय अपनी श्रद्धांजलि'अनुज की श्रद्धांजलि' शीर्षक लेख में व्यक्त है। इस अंक में धूमिल की अप्रकाशित सात कविताएँ भी प्रकाशित हैं। विष्णुचंद्र शर्मा 'स्वर्गीय धूमिल के गाँव में' शीर्षक लेख में धूमिल के पास-पड़ोस में उपस्थिति का अर्थ क्या था इसका जायजा लेते हैं।

यह अंक धूमिल पर श्रद्धांजलि व्यक्त करने के लिए ही आयोजित किया गया है किंतु इसके लेखों-संस्मरण आदि में श्रद्धाविगलित भावुक दृष्टि का अभाव देखने को मिलता है। यहाँ धूमिल का मूल्यांकन उनके अंतर्विरोधों को नज़रअंदाज़ करते हुए नहीं बल्कि उनको समग्रता में ग्रहण करते हुए किया गया है। यहाँ भी धूमिल के व्यक्तित्व-कृतित्व के प्रति 'आलोचनात्मक रुख' ही धारण किया गया है जिससे 'धूमिल की वास्तविक छवि' को उजागर किया जा सके।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी विशेषांक- (नवांक-49-50 अप्रैल-सितं., 1979)

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की मृत्यु के उपरांत उन पर श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए नामवर सिंह ने 'आलोचना' पत्रिका का एक अंक उनकी रचनाशीलता, इतिहास बोध, आलोचकीय प्रतिभा आदि रूप को समग्रता में प्रस्तुत करते हुए आयोजित किया। इस अंक में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की इतिहास-दृष्टि पर, विद्यानिवास मिश्र, रघुवंश, बच्चन सिंह और मैनेजर पांडेय का आलेख प्रकाशित है। उनके 'इतिहास-बोध' पर निर्मल वर्मा ने भी अपना मत प्रकट किया है। आचार्य द्विवेदी की मध्यकालीन बोध और आधुनिक दृष्टि पर रामस्वरूप चतुर्वेदी, गंगाप्रसाद विमल, विचार करते हुए देखे जा सकते हैं। शिवकुमार मिश्र भक्तिकाल की पुनर्व्याख्या की पड़ताल करते हैं, उनके योगदान की चर्चा 'भक्ति आंदोलन की पुर्नव्याख्या में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का योगदान' शीर्षक लेख में करते हैं डॉ0 देवराज उनके कथा-साहित्य पर अपने विचार व्यक्त करते हैं। कपिला वात्स्यायन इस अंक में अपना योगदान दो रूपों में करती हैंएक संस्मरण लेखिका के रूप में, तथा दूसरे 'कला, इतिहासकार पंडित हजारीप्रसाद द्विवेदी' शीर्षक लेख की लेखिका के रूप में। नंदकिशोर नवल 'आचार्य द्विवेदी और प्रगतिवाद' शीर्षक लेख में आचार्य द्विवेदी का मूल्यांकन प्रगतिशील आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में रखकर करते हैं। शिवमंगल सिंह सुमन अपना लेख जो कि संस्मरण भी है और आचार्य द्विवेदी का मूल्यांकन भी। रमेशकुंतल मेघ उन्हें 'रिनैसाँ-पुरुष' के रूप में देखते हैं। भोलानाथ तिवारी उनके निबंधों और अन्य कृतियों का मूल्यांकन 'शैली के धनी' शीर्षक लेख में करते हैं। विशन सिंह यादव 'कुटज निबंध का शैली वैज्ञानिक अध्ययन' करते हुए देखे जा सकते हैं। इस अंक में आचार्य द्विवेदी और शिवमंगल सिंह सुमन के बीच हुए पत्र-व्यहार के प्रमुख पत्रों को प्रकाशित किया गया है। इसी अंक में 'अनामदास का पोथा' उपन्यास का एक अंश भी प्रकाशित किया गया है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की दो आरंभिक कविताएँ भी प्रकाशित है।

इस अंक का मुख्य आकर्षण नामवर सिंह द्वारा लिखित 'दूसरी परंपरा की खोज' शीर्षक

लेख भी है, जो आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के मूल्यांकन के संदर्भ में नई दृष्टि प्रदान करता है, साथ ही यह लेख साहित्य की परंपरा के मूल्यांकन के परिप्रेक्ष्य में नवीन दिशा का प्रस्थान बिंदु बनता है। अर्थात् 'आलोचना' पत्रिका के माध्यम से हिंदी आलोचना की परंपरा में जो 'कैनन' बना हुआ था उसे बदलने का कार्य हुआ है। उस 'कैनन' में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी को स्थान प्राप्त हुआ है। नामवर सिंह का मत है कि "हजारीप्रसाद द्विवेदी पर विशेषांक निकालकर मैंने आलोचना के कैनन में परिवर्तन किया था।"[7] इस वक्तव्य से आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी पर केंद्रित 'आलोचना' पत्रिका का महत्त्व स्वतः स्पष्ट हो जाता है। इसके अतिरिक्त इस वक्तव्य से नामवर सिंह का संपादकीय विवेक का भी बोध हो जाता है कि, वह 'आलोचना' पत्रिका के माध्यम से हिंदी साहित्य और आलोचना के क्षेत्र में क्या करना चाहते थे।

प्रेमचंद विशेषांक (नवांक- 51-52, अक्तू., 1979- मार्च, 1980.)

'आलोचना' पत्रिका का नवांक- 51-52 प्रेमचंद जन्मशताब्दी के अवसर पर आयोजित 'प्रमचंद-स्मृति अंक' है। 'प्रेमचंद' पर आयोजित इस विशेषांक का महत्त्व इस बात को स्पष्ट करने में है, कि प्रेमचंद की जन्मशताब्दी को किस रूप में मनाए और उनकी आज के संदर्भों में प्रासंगिकता क्या है। दूसरी तरफ प्रेमचंद की कला और साहित्य पर उठाए गए सवालों का जवाब भी दिया गया है। प्रेमचंद पर प्रकाशित यह अंक साहित्य की सामाजिक उपादेयता को स्पष्ट करानेवाला अंक है। इसके माध्यम से नवीन कलावादी उत्थान की जड़ काटने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त प्रेमचंद को उन लोगों की व्याख्या से बचाने का भी कार्य करना है, जो अपने को उदारतावादी दृष्टि के रचनाकार मानते हैं जो मनोवैज्ञानिक चेतना की पड़ताल के आधार पर प्रेमचंद पर व्यापकता और गहराई का सवाल उठाकर उन्हें सरलीकृत संवेदना के कथाकार के रूप में चित्रित करते हैं, जबकि दूसरी तरफ इस अंक के माध्यम से उनसे भी निपटने का प्रयास किया गया है, जो प्रेमचंद को बिल्कुल ही मार्क्सवादी के रूप में चित्रित करते हैं या फिर उन्हें गाँधीवादी के

रूप में चित्रित करने का कार्य करते हैं।[8]

नामवर सिंह 'प्रेमचंद की प्रासंगिकता' के आधार को पूरनचंद्र जोशी के कथन के माध्यम से स्पष्ट करते हैं कि :"जो कल के औपनिवेशिक दासता से ग्रस्त भारत और आज के अर्द्ध-सामंती अवशेषों तथा नवोदित पूँजीवादी विकास के अंतर्विरोधों से उद्वेलित भारत के बीच निरंतरता और विच्छन्नता के द्वंद्वात्मक संबंध को समझते हुए आज कर्म और सृजन की अपार संभावनाओं को देख रहा है, वही प्रेमचंद का सही मूल्यांकन कर सकता है। मुख्य प्रश्न उस ऐतिहासिक प्रतिष्ठा का है। प्रेमचंद की विगत महत्ता और वर्तमान अर्थवत्ता की समस्या का सुलझाव इसी परिप्रेक्ष्य में संभव है।"[9] निर्मल वर्मा द्वारा प्रेमचंद की कला को लेकर जो सवाल उठाए गए हैं, उनका उत्तर नामवर सिंह अपने संपादकीय वक्तव्य में देते हैं। और निर्मल वर्मा के कलावादी निहितार्थों को स्पष्टतः उजागर करते हैं। पूरनचंद्र जोशी 'प्रेमचंद की अमरता के मूल स्रोत' शीर्षक अपने लेख में प्रेमचंद के व्यक्तित्त्व का मूल्यांकन साहित्य के समाजशास्त्रीय दृष्टि से करते हैं। उनका यह लेख कलावादी साहित्य विवेचन के संदर्भ में अत्यंत कड़ा प्रतिकार है। प्रेमचंद का मूल्यांकन वर्तमान संदर्भों में किस प्रकार किया जाए इसका विवेचन भीष्म साहनी 'प्रेमचंद आज के संदर्भ में' शीर्षक लेख में करते हैं। साहित्य की कलावादी और समाजोन्मुख दृष्टि का उल्लेख करते हुए प्रेमचंद की महत्ता का आधार समाजोन्मुख दृष्टि के कारण ही है, इसको ही स्पष्ट करते हैं। इसी अंक में भैरवप्रसाद गुप्त ने प्रमचंद का मूल्यांकन स्वाधीनता संग्राम के संदर्भ में'प्रेमचंद और स्वतंत्रता आंदोलन' शीर्षक लेख में किया है। शमशेर सिंह नरूला अपने लेख 'प्रेमचंद की परंपरा' में प्रेमचंद की परंपरा का स्वरूप स्पष्ट करते हैं। खगेंद्र ठाकुर प्रेमचंद का प्रगतिशील आंदोलन के संबंध में विस्तृत अध्ययन 'प्रेमचंद और प्रगतिशील आंदोलन' शीर्षक शोधपरक लेख में प्रस्तुत करते हैं। प्रेमचंद के साहित्य की सौंदर्यशास्त्रीय समस्या नंदकिशोर नवल अपना मत 'प्रेमचंद का सौंदर्यशास्त्र' शीर्षक लेख में प्रकट करते हैं। रामबक्ष का लेख 'प्रेमचंद की विचारधारा और उसका सामाजिक आधार' शीर्षक

से प्रकाशित है। द्वारिका प्रसाद चारुमित्र का लेख 'नैतिक मूल्यों की समस्या और प्रेमचंद' शीर्षक से तथा कृष्णबिहारी मिश्र का लेख 'प्रेमचंद सामाजिक क्रांति के अग्रदूत' शीर्षक से प्रकाशित है। नईम अहमद 'प्रेमचंद की क्रांतिकारी चेतना को स्पष्ट करते हैं। इसीप्रकार श्याम कश्यप 'यथार्थवाद और प्रेमचंद' शीर्षक आलेख में उनके यथार्थवाद 'क्रांतिकारी यथार्थवाद' के नजदीक बताते हैं। गोपालराय 'प्रेमचंद की उपन्यास-कला' की पड़ताल करते हैं। तो परमानंद श्रीवास्तव 'प्रेमचंद की कहानियाँ' शीर्षक में उनकी कहानियों का मूल्यांकन करते हैं। शंभुनाथ 'नई नैतिकता के संदर्भ में मालती और मेहता का मूल्यांकन 'नई नैतिकता मेहता और मालती' शीर्षक लेख में करते हैं। काथरीना थोमा द्वारा 'प्रेमाश्रम : गाँधीवाद और काल्पनिकता' शीर्षक आलेख में गाँधीवादी नजरिए का प्रेमाश्रम से क्या संबंध है, इसका अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। शिवकुमार मिश्र का आलेख 'प्रेमचंद और परवर्ती कथा-परिदृश्य' शीर्षक से प्रकाशित है जिसमें... मैनेजर पांडेय कलावादी रुझान का खंडन 'प्रासंगिकता का प्रश्न और प्रेमचंद की प्रासंगिकता' शीर्षक आलेख में करते हैं।

उपर्युक्त आलेख 'आलोचना' के नवांक-51-52 में प्रकाशित है, जो प्रेमचंद-स्मृति अंक के रूप में प्रकाशित हुआ है, जबकि नवांक-53 में भी प्रेमचंद पर कई आलेख प्रकाशित किए गए हैं, जिन्हें प्रेमचंद विशेषांक का अंग ही समझना चाहिए उसे पूरक सामग्री के रूप में देखना चाहिए। उदाहरण के लिए नवांक-53 में प्रकाशित जाफ़र रजा का शोधपरक आलेख 'प्रेमचंद का भाषा शिल्प : एक आलोचनात्मक अध्ययन' शीर्षक से प्रकाशित है। भोलानाथ तिवारी ने 'प्रेमचंद की शैली' लेख में प्रेमचंद की शैली क्या है? इसका अध्ययन प्रस्तुत किया है। श्रीनारायण पांडेय प्रेमचंद के संघर्षों का उद्घाटन 'प्रेमचंद का संघर्ष' शीर्षक लेख में करते हैं। 'प्रेमचंद की सार्थकता' शीर्षक आलेख में सुरेश शर्मा प्रेमचंद की महत्ता एवं सार्थकता की पड़ताल करते हैं।

इस विशेषांक से स्पष्ट है कि प्रेमचंद की प्रासंगिकता का आधार 'विगत महत्ता और वर्तमान अर्थवत्ता' में निहित है। इसके अतिरिक्त साहित्य में कलावादी रुझान का जबर्दस्त खंडन प्रेमचंद पर

सामाजिक दृष्टिकोणों से युक्त लेखों के माध्यम से किया गया है। इसलिए कहा जा सकता है कि इस विशेषांक का महत्त्व नवकलावादी, रूपवादी दृष्टियों के विरूद्ध समाजोन्मुख दृष्टि के संदर्भ में निहित है।

नागार्जुन विशेषांक (नवांक-56-57, जनवरी-जून, 1981.)

नामवर सिंह ने 'आलोचना' पत्रिका का नवांक-56-57 नागार्जुन पर आयोजित किया। यह अंक नागार्जुन की सत्तरवी वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया है। इसी अंक में समकालीन युवा कवियों की बीस काव्य-संग्रहों की समीक्षाएँ भी 'समकालीन कविता' शीर्षक स्तंभ में प्रकाशित है। मूलतः यह अंक समकालीन कविता और नागार्जुन पर एक प्रकाशित संयुक्तांक है। नागार्जुन पर विशेषांक आयोजित करते हुए उसी अंक में समकालीन कविता पर इतनी प्रचुर सामग्री का प्रकाशन वस्तुतः समकालीन कविता को नागार्जुन की जनवादी कविता की 'ज़मीन' से जोड़ना था। इसी अंक में नामवर सिंह द्वारा नागार्जुन पर लिखित 'कविता की ज़मीन और ज़मीन की कविता' शीर्षक संपादकीय प्रकाशित है। यदि ध्यान दें तो इस अंक में केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन और शमशेर बहादुर सिंह पर 'समकालीन कवि' शीर्षक स्तंभ में अलग से आलेख प्रकाशित किए गए हैं। इसी अंक में 'दो विशिष्ट कवि' स्तंभ के अंतर्गत केदारनाथ सिंह और कुँवर नारायण पर भी आलेख उपलब्ध है। किंतु इस 'विशिष्ट कवि' स्तंभ में केंद्रीयता केदारनाथ सिंह को मिली हुई है। केदारनाथ सिंह पर इस स्तंभ में केदारनाथ सिंह पर दो आलेख छापे गए हैं, वहीं कुँवर नारायण पर एक लेख प्रकाशित है। इस प्रकार से स्पष्ट है कि नागार्जुन की कविता की जनवादी ज़मीन है, वह ज़मीन सिर्फ नागार्जुन की नहीं बल्कि केदारनाथ अग्रवाल, शमशेरबहादुर सिंह, त्रिलोचन के साथ केदारनाथ सिंह का भी उसमें कुछ हिस्सा है और उसी ज़मीन की विरासत से समकालीन युवा कवियों को जोड़ने का काम किया गया है। इसी अंक में जनवादी कविता के विरुद्ध प्रतिपक्ष की भूमिका निभानेवाली कलावादी चिंतन के प्रति कड़ी प्रतिक्रिया जताने का काम 'पूर्वग्रह' पत्रिका (अंक-39-40) और

प्रगतिशील कविता के अन्य नवीन आयामों को उद्घाटित करनेवाली-'जनवादी' कही जानेवाली 'कंक' पत्रिका की समीक्षा भी प्रकाशित है। इस प्रकार नागार्जुन की सत्तरवी वर्षगाँठ पर आयोजित 'आलोचना' का यह अंक तत्कालीन हिंदी कविता में चलनेवाली व्यापक गतिविधियों से स्पष्टतः परिचित कराता है। आशुतोष कुमार समकालीन कविता की नई बनती पहचान के लिहाज से इस अंक को अत्यंत महत्वपूर्ण और रेखांकित करने योग्य मानते हैं।[10] इस अंक में नागार्जुन से लिए गए दो साक्षात्कारजो 'मनोहरश्याम जोशी, कृष्णा सोबती' द्वारा लिए गए हैंभी प्रकाशित हैं। केदारनाथ सिंह नागार्जुन को 'खतरनाक ढंग से कवि होने की बात करते हैं। विष्णु खरे 'हिंदी का वाल्ट विटमैन' शीर्षक से लेख लिखते हैं। रघुवीर सहाय नागार्जुन को 'मनुष्य की सच्ची पहचान' करनेवाले कवि के रूप में चित्रित करते हैं। अरुण कमल नागार्जुन को 'शतरंज-से-संसार का सधा खिलाड़ी' के रूप में चित्रित करते हैं।

जिन समकालीन कवियों के कविता-संग्रहों की इस अंक में समीक्षाएँ प्रकाशित हुई हैं, उनमें कई कवि आज की हिंदी कविता के आधार स्तंभ हैं। उन कवियों में विनोदकुमार शुक्ल (वह आदमी नया गरम कोट पहनकर चला गया विचार की तरह), कुमारेंद्र पारसनाथ सिंह (इतिहास का संवाद) लीलाधर जगूड़ी (घबराये हुए शब्द) ऋतुराज (पुल पर पानी), चंद्रकांत देवताले (लकड़बग्घा हँस रहा है) अरुण कमल (अपनी केवल धार) उदय प्रकाश (सुनो कारीगर), राजेश जोशी (एक दिन बोलेंगे पेड़), असद जैदी (बहनें और अन्य कविताएँ), प्रयाग शुक्ल (यह एक दिन) मलयज (अपने होने को अप्रकाशित करता हुआ) विष्णु नागर, पंकज सिंह, श्रीराम वर्मा, ज्ञानेंद्रपति, मंगलेश डबराल, गिरीधर राठी, विश्वनाथ त्रिपाठी, विनाद भारद्वाज, कुमार विकल आदि कवियों के काव्य संग्रहों की समीक्षाएँ प्रकाशित हैं। इस प्रकार 'आलोचना' का नागार्जुन विशेषांक न केवल हिंदी के अत्यंत उर्वर कवि की सत्तरवीं वर्षगाँठ पर आयोजित अंक है, बल्कि समकालीन कविता की स्थिति से बोध करानेवाला एवं कविता की जनवादी परंपरा को आगे बढ़ाने वाला अंक भी बन जाता है।

रामविलास शर्मा विशेषांक (नवांक-60-61, जनवरी-जून, 1982.)

नामवर सिंह ने हिंदी आलोचना के स्तंभों में से एक स्तंभ डॉ0 रामविलास शर्मा की सत्तरवीं वर्षगाँठ पर 'आलोचना' पत्रिका का अत्यंत महत्वपूर्ण अंक आयोजित किया। यह अंक मूलतः हिंदी आलोचना के शीर्ष पुरूष 'हिंदी जाति के समालोचक और प्रगतिशील आलोचना के अग्रदूत डॉ0 रामविलास शर्मा पर 'आलोचना' परिवार की ओर से अभिनंदन के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस अंक का संपादकीय जो 'केवल जलती मशाल' शीर्षक से लिखा गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि हिंदी आलोचना में रामविलास शर्मा के मूल्यांकन के संदर्भ में इसकी चर्चा के बिना कोई भी मूल्यांकन अधूरा ही समझा जाएगा। इस अंक में डॉ0 रामविलास शर्मा के पूरे परिवार का इतिहास, एक-दूसरे के बीच आपसी रिश्ते, एवं संघर्ष की गाथा 'घर की बात' शीर्षक में प्रकाशित है। 'आलोचना' पत्रिका के इस अंक की आधी सामग्री 'घर की बात' शीर्षक से पारिवारिक गाथा के रूप में प्रकाशित है। वस्तुतः 'आलोचना' का डॉ0 रामविलास शर्मा अंक सिर्फ रामविलास जी पर आयोजित नहीं थाः बल्कि उसमें उनके पूरे 'घर की बात' है। रामविलास जी के अनुसार अपने 'घर की बात' को उन्होंने 'आलोचना' के लिए संकलित किया था।[11] इसी अंक में नंदकिशोर नवल की डायरी और संस्मरण मिश्रित लेख 'हरसिंगार की छाया में' है, जिसमें डॉ0 रामविलास शर्मा की पारिवारिक व दैनिक जीवन की झांकियाँ एक बाहरी व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत की गई हैं। केदारनाथ अग्रवाल का संस्मरण 'मेरे प्रिय डॉक्टर' शीर्षक से छपा है। केदारनाथ सिंह डॉ0 रामविलास शर्मा के कवि रूप का मूल्यांकन 'रामविलास शर्मा की कविताएँ' शीर्षक आलेख में करते हैं। शिवकुमार मिश्र रामविलास का मूल्यांकन मार्क्सवादी आलोचना के परिप्रेक्ष्य में 'मार्क्सवादी आलोचन के बुनियादी सरोकार और डॉ0 रामविलास शर्मा' शीर्षक लेख में करते हैं। गोपाल अपने लेख 'डॉ0 रामविलास शर्मा की कथा-समीक्षा' में रामविलास जी की कथा आलोचना संबंधी दृष्टि का मूल्यांकन प्रस्तुत करते हैं।

इस प्रकार 'आलोचना' पत्रिका का रामविलास शर्मा विशेषांक हिंदी आलोचना के महत्त्वपूर्ण स्तंभ के सम्मान में आयोजित किया गया है। यहाँ उनके कृतित्त्व के संपूर्ण पक्ष का मूल्यांकन न होकर उनके व्यक्तित्त्व के ऊर्जावान चरित्र पर अधिक बल दिया गया है। नामवर सिंह ही वह व्यक्ति हैं जिन्होंने 'आलोचना' पत्रिका के माध्यम से रामविलास जी पर संभवतः पहला व्यवस्थित विशेषांक आयोजित किया उनके महत्त्व से हिंदी जगत परिचित तो था ही किंतु हिंदी आलोचना के कैनन में उन्हें स्थापित किया इस प्रकार, हिंदी आलोचना के विकास में रामविलास शर्मा के अन्यतम योगदान का पक्ष प्रस्तुत कर 'आलोचना' पत्रिका हिंदी आलोचना के 'कैनन' में उनकी ज्वलंत उपस्थिति का बोध कराती है।

समीक्षा अंक (नवांक-62-63, जुलाई-सितं., 1982.)

नामवर सिंह संपादित 'आलोचना' पत्रिका का नवांक- 60-61 हिंदी आलोचना के महत्त्वपूर्ण स्तंभ डॉ0 रामविलस शर्मा पर केंद्रित था तो, इसके ठीक बाद का अंक (नवांक 62-63) 'समीक्षा अंक' के रूप में आयोजित किया गया। इस अंक में समकालीन युवा आलोचकों की आलोचनात्मक पुस्तकों की समीक्षाएँ प्रमुखता से प्रकाशित की गईं। इन पुस्तकों में कुछ युवा कवियों की आलोचनात्मक पुस्तकें भी समीक्षित हैं। डॉ0 रामविलास शर्मा जैसे आलोचक के सम्मान में आयोजित अंक के उपरांत ठीक अगला अंक समकालीन आलोचना की महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की गंभीर समीक्षाओं पर केंद्रित करने का भी अपना एक अलग निहितार्थ है। इन दोनों अंकों को एक साथ रखकर मूल्यांकन करें तो यह स्पष्ट होगा है कि हिंदी आलोचना के समकालीन युवा पीढ़ी के आलोचकों का प्रेरणा-स्रोत कौन है? और हिंदी आलोचना की भावी दिशा आधुनिकतावादी-रूपवादी -कलावादी समीक्षा की ओर जाएगी या उसका मार्ग समाजोन्मुख दिशा की ओर प्रशस्त करना है। उसकी प्रगतिशील आलोचना की भूमिका की ओर अग्रसरित करना है। इस अंक में रघुवीर सहाय (लिखने का कारण), मलयज (कविता से साक्षात्कार) के आलोचना-कर्म का मूल्यांकन अरुण कमल

द्वारा किया गया है। अरुण कमल अपने मूल्यांकन में स्पष्ट करते हैं कि मलयज और रघुवीर सहाय दोनों ही कविता को कविता के रूप में देखने की बात करते हैं किंतु कविता का समाज से गहरा संबंध स्वीकार करते हैं। कविता को 'कविता के संसार' के साथ-साथ 'कविता के बाहर के संसार' को जोड़ने की भी बात करते हैं। नंदकिशोर नवल ने निर्मल वर्मा (शब्द और स्मृति) का और परमानंद श्रीवास्तव ने अज्ञेय (धार और किनारे) का मूल्यांकन करते हुए उनकी आधुनिकतावादी आलोचना-कर्म की सीमाओं से परिचित कराया है।

गोपाल 'हिंदी कथालोचना : 'धुँधलके के गिरफ्त में' शीर्षक से राजेंद्र यादव द्वारा अठारह उपन्यासों की गई समीक्षा प्रस्तुत करते हैं। इसी लेख में मधुरेश की 'कथालोचना' की पुस्तक सिलसिला की समीक्षा भी प्रस्तुत की गई है।

श्याम कश्यप ने शिवकुमार मिश्र ('दर्शन, साहित्य और समाज' एवं 'प्रेमचंद : विरासत का सवाल') की आलोचना-कर्म का मूल्यांकन 'परम उदारतावाद से चरम संकीर्णतावाद तक की सैद्धांतिक यात्रा' शीर्षक समीक्षा में करते हैं। खगेंद्र ठाकुर नंदकिशोर नवल (हिंदी आलोचना का विकास) के आलोचना-कर्म का मूल्यांकन 'हिंदी आलोचना विकास की मंजिलें' समीक्षा में करते हैं। कमला प्रसाद 'केदारनाथ अग्रवाल : एक अंतरंग गद्यकर्मी' शीर्षक समीक्षा में केदारनाथ अग्रवाल ('समय समय पर', 'विचार बोध', विवेक-विवेचन) के आलोचना-कर्म पर अपना मत प्रस्तुत करते हैं। अजय तिवारी मैनेजर पांडेय की पुस्तक 'शब्द और कर्म' की समीक्षा 'सैद्धांतिक शब्द' और व्यावहारिक 'कर्म' शीर्षक से करते हैं। चारुमित्र ने 'अंधेरे से अंधेरे में' शीर्षक समीक्षा में श्रीकांत वर्मा (बीसवीं शताब्दी के अंधेरे में) के आलोचना-कर्म का जायजा प्रस्तुत किया है। गीता शर्मा समकालीन कविता पर केंद्रित दो महत्वपूर्ण पुस्तकों समकालीन कविता का व्याकरण (परमानंद श्रीवास्तव), समकालीन हिंदी कविता (विश्वनाथ प्रसाद तिवारी) की समीक्षा 'सही परिप्रेक्ष्य का अभाव' शीर्षक से करती हैं, और समकालीन कविता पर दोनों लेखकों के परिप्रेक्ष्य के अभाव को

उल्लिखित करती हैं। कमलकिशोर गोयनका द्वारा संपादित 'प्रेमचंद विश्वकोश' की समीक्षा गोपाल करते हैं। वहीं ई. एम. एस. नंबूदिरिपाद की पुस्तक 'कला साहित्य और संस्कृति' की समीक्षा खगेंद्र ठाकुर ने की है। विजयमोहन सिंह 'विरोधाभासों की समृद्धि का स्तूप' शीर्षक से रमेशचंद्र शाह की पुस्तक (वागर्थ) की समीक्षा करते हैं। बच्चन सिंह मैनेजर पांडेय (साहित्य और इतिहास-दृष्टि) के साहित्य के इतिहास संबंधी दृष्टि का मूल्यांकन 'साहित्य की इतिहास दृष्टि और मार्क्सवादी दृष्टि' शीर्षक समीक्षा में करते हैं।

इस अंक से स्पष्ट है कि हिंदी आलोचना में प्रगतिशील आलोचना दृष्टि के लिए मार्ग प्रशस्त करने की कोशिश की गई है। कलावादी-रूपवादी समीक्षा एवं चिंतन की मानव विरोधी समाज विरोधी मान्यताओं को उद्घाटित करते हुए उसे हिंदी आलोचना के भावी विकास में किस प्रकार अनुपयोगी होगा इसे स्पष्ट किया गया है। 'आलोचना' में प्रकाशित प्रगतिशील आलोचकों की समीक्षा पुस्तकों और आज के हिंदी आलोचना के विकास को देखते हैं तो हिंदी आलोचना में उन्हीं समीक्षित पुस्तकों के रचनाकार और समीक्षकों की कहने की आवश्यकता नहीं कि हिंदी आलोचना का निरंतर विकास इन्हीं आलोचकों की आलोचनात्मक विवेक से होता चला जा रहा है।

उपन्यास अंक (नवांक : 64-65, जनवरी-जून., 1983.)

नवांक 64-65 में हिंदी उपन्यास की में से चुनी हुई उपन्यासों समकालीन औपन्यासिक कृतियों की समीक्षाएँ प्रकाशित हैं। 'आलोचना' का नवांक-64-65 'उपन्यास अंक' है किंतु छोटाराम कुम्हार 'आलोचना' पत्रिका के सर्वेक्षणात्मक अध्ययन पर आधारित अपने शोध-कार्य में इस अंक को 'समीक्षा अंक' के अंतर्गत रखते हैं।[12] 'उपन्यास अंक' को 'समीक्षा अंक' के अंतर्गत समेट लेने का कारण यह है कि इन दोनों अंकों में पुस्तक समीक्षाएँ ही प्रकाशित हैं जबकि उपन्यास और आलोचना कर्म का अलग-अलग उल्लेख करते हुए, भी वह औपन्यासिक कृतियों और आलोचनात्मक कृतियों की समीक्षा को एक समझ बैठे हैं। यदि दोनों एक ही होतीं तो 'समीक्षा अंक' में एक भी

'उपन्यास' की समीक्षा प्रकाशित की जानी चाहिए थी? जबकि वस्तुस्थिति यह है 'समीक्षा अंक' और 'उपन्यास अंक' 'आलोचना' पत्रिका के दो अलग-अलग स्वतंत्र विशेषांक हैं। वस्तुतः 'आलोचना' का नवांक-64-65 'उपन्यास अंक' है।

इस अंक में हिंदी के समकालीन प्रमुख उपन्यासों की समीक्षाओं के माध्यम से समकालीन हिंदी उपन्यास के स्वरूप एवं ढाँचे की वस्तुस्थिति का परिचय प्राप्त किया जा सकता है।

इस अंक में मनोहरश्याम जोशी के 'कसप' उपन्यास पर एक साथ तीन समीक्षकों (विजयमोहन सिंह, बटरोही, वागीश शुक्ल) की समीक्षएँ प्रकाशित हैं। अमृतलाल नागर के दो उपन्यास 'नाच्यौं बहुत गोपाल' पर श्याम कश्यप की समीक्षा तथा 'खंजन नयन' पर गोपाल की समीक्षा प्रकाशित है। परमानंद श्रीवास्तव ने गिरिराज किशोर की तीन औपन्यासिक कृतियों ('इंद्र सुने', 'यथा प्रस्तावित', तीसरी सत्ता) की समीक्षा की है, जो 'मानवीय स्थिति से उलझाव भरा संपर्क' शीर्षक से प्रकाशित है। भीष्म साहनी के उपन्यास 'बसंती' की समीक्षा खगेंद्र ठाकुर ने की है। अजय तिवारी ने मन्नू भंडारी की कृति 'महाभोज' की समीक्षा लिखी है। मार्कंडेय के उपन्यास 'अग्निबीज' पर 'चारुमित्र' की समीक्षा प्रकाशित है। गोविंद मिश्र की औपन्यासिक कृति 'हुजूर दरबार' की समीक्षा कुलानंद मिश्र ने की है। रवींद्र कालिया के उपन्यास 'खुदा सही सलामत है' की समीक्षा शैलेश्वर सती प्रसाद ने की है। यहँ यह तथ्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि इन हिंदी उपन्यासों की नवीनतम औपन्यासिक कृतियों की समीक्षाओं के साथ ही प्रेमचंद के कथा साहित्य पर विजेंद्रनारायण सिंह का एक गंभीर शोधालेख 'प्रेमचंद : सवर्ण से अवर्ण तक की यात्रा का समाजशास्त्र' शीर्षक से प्रकाशित है। वस्तुतः यह आलेख प्रकाशित कर हिंदी उपन्यास को नए लेखकों की पीढ़ी से प्रेमचंद की कथा साहित्य की परंपरा को जोड़ने के प्रयास के रूप में भी देखा जा सकता है। इसके साथ ही विजयमोहन सिंह का एक आलेख 'मुक्तिबोध की कहानियों' पर 'साँवली गहराइयों की कहानियाँ' शीर्षक से प्रकाशित है।

इस अंक में गुजराती उपन्यासकार रघुवीर चौधरी की कथात्रयी'उपरवास' 'सहवास', और 'अंतरवास' का मूल्यांकन महावीरसिंह चौहान द्वारा किया गया है। इसी अंक में कार्तिकचंद्र दत्त द्वारा बंगला भाषा के प्रसिद्ध उपन्यासकार बंकिमचंद्र चटर्जी के उपन्यास 'आनंदमठ' के शताब्दी वर्ष के अवसर पर उसके सांप्रदायिक के होने की आरोप की पड़ताल की गई है। कार्तिकचंद्र दत्त इस उपन्यास के विभिन्न संस्करणों के माध्यम से उस पर गहन और विस्तृत अध्ययन 'आनंदमठ और वंदेमातरम् : एक शताब्दी परिचर्चा शीर्षक से शोधालेख में करते हैं। इस अंक का संपादकीय 'उपन्यास और राजनीति' विषय पर केंद्रित है। अपने संपादकीय में 'आनंदमठ' को लेकर होनेवाली राजनीति का विरोध नामवर सिंह करते हैं, उपन्यास के विभिन्न संस्करणों के माध्यम से स्पष्ट करते हैं कि किस प्रकार इस उपन्यास का रूप विविध संस्करणों में बदलता गया है।

उपन्यास अंक को समग्रता में देखने से स्पष्ट होगा कि इसमें न केवल हिंदी उपन्यास का नवीनतम और समकालीन हिंदी उपन्यासों का स्वरूप का पता चलता है. बल्कि इसके माध्यम से 'भारतीय उपन्यास की अवधारणा' के परिप्रेक्ष्य में रखकर इसे देखने की कोशिश भी कही जा सकती है। वस्तुतः 'आलोचना' पत्रिका का 'उपन्यास अंक' हिंदी उपन्यास की नवीनतम प्रवृत्तियों के स्वरूप की खोज का प्रयास करता है।

मार्क्स अंक (नवांक- 70, जुलाई-सितं., 1984.)

'आलोचना' पत्रिका का नवांक- 70 कार्ल मार्क्स की मृत्यु की सौंवी पुण्यतिथि पर आयोजित स्मृति अंक है। कार्ल मार्क्स के सिद्धांतों का कला और साहित्य चिंतन में उपयोग से कला-संस्कृति संबंधी अध्ययनों में क्या परिवर्तन हुए हैं इस अंक से गुजरते हुए इसका परिचय प्राप्त किया जा सकता है। इस अंक में वाल्टर बेन्यामिन के लेख का अनुवाद 'यांत्रिक पुनरुत्पादन के युग में कलाकृति' शीर्षक से प्रकाशित है। संस्कृति संबंधी मार्क्सवादी दृष्टिकोण क्या है. तथा उसका भारतीय परिप्रेक्ष्य क्या है? इसे गोविंद पुरुषोत्तम देशपांडे के लेख जो 'हमारी परंपरा और हमारी

शतखंड संस्कृति : एक मार्क्सवादी दृष्टिकोण' शीर्षक से अनूदित लेख के माध्यम से जाना जा सकता है। रमेशकुंतल मेघ अत्यंत गंभीर अध्ययन 'कार्लमार्क्स के पाँच बीज-शब्दों पर करते हुए देखे जा सकते हैं। जो इसी शीर्षक से 'कार्लमार्क्स के पाँच बीज शब्द' शीर्षक से प्रकाशित है।

शिवकुमार मिश्र का विद्वतापूर्ण आलेख 'मार्क्सवादी आलोचना की समस्याएँ : हिंदी आलोचना के संदर्भ में', के माध्यम से हिंदी की मार्क्सवादी आलोचना की प्रवृत्तियों तथा उसकी प्रकृति का परिचय प्राप्त किया जा सकता है। खगेंद्र ठाकुर भारतीय काव्यशास्त्र का मूल्यांकन मार्क्सवादी दृष्टि से करने का कार्य 'भारतीय काव्यशास्त्र और मार्क्सवाद' शीर्षक आलेख में करते हैं। इसी अंक में वीरभारत तलवार का शोधालेख 'हिंदी प्रदेश में साम्रज्यवादी चेतना का प्रसार' शीर्षक से प्रकाशित है। डॉ0 रामविलास शर्मा का अत्यंत विद्वतापूर्ण शोधालेख 'विश्वसाम्राज्यविरोधी क्रांति और एशिया' भी इसी अंक में प्राप्त किया जा सकता है। गिरीश मिश्र द्वारा डॉ0 रामविलास शर्मा के अत्यंत महत्त्वपूर्ण ग्रंथ 'भारत में अंग्रेज़ीराज और मार्क्सवाद' की अत्यंत विवादित समीक्षा भी इसी अंक में प्रकाशित है।

कार्लमार्क्स की सौंवी पुण्यतिथि पर 'आलोचना' पत्रिका ने हिंदी के लेखकों, रचनाकारों और आलोचकों से 'मार्क्स और हिंदी के रचनाकार : एक सर्वेक्षण' की योजना बनाई थी। 'आलोचना' पत्रिका ने यह सर्वेक्षण इसी 'मार्क्स अंक' में प्रकाशन के लिए करवाया था। इस अंक के सह-संपादक नंदकिशोर नवल थे। इस योजना के विषय में नंदकिशोर नवल का वक्तव्य इस सर्वेक्षण के आरंभ में प्रकाशित हुआ है। इसके विषय में वह लिखते हैं कि "आलोचना' के प्रस्तुत विशेषांक के लिए, अपनी योजना के अनुसार हमने एक प्रश्नावली हिंदी के करीब साठ लेखकों के पास भेजी थी। लेखकों में, पुरानी और नई पीढ़ी के प्रतिष्ठित रचनाकार थे। उद्देश्य यह जानना कि उन्हें मार्क्स और मार्क्सवाद के बारे में, प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से वस्तुतः क्या और कितना पढ़ा है। इसके अलावा यह भी कि मार्क्स ने उन्हें कैसे प्रभावित किया है और उनकी दृष्टि में आज वे

कितने प्रासंगिक हैं। प्रश्नावली का स्वरूप यह था :

1. आपने मार्क्स की कौन-सी पुस्तक/ पुस्तकें पढ़ी हैं?

2. मार्क्स ने आपको किस रूप में प्रभावित किया है?

3. आज मार्क्स आपको कितने प्रासंगिक लगते हैं?"[13]

ध्यातव्य है कि साठ लेखकों के पास भेजी गई इस प्रश्नावली का उत्तर मात्र ग्यारह लेखकों ने दिया है, जिसमें पुरानी, बीच की और नई पीढ़ी के कवि-कथाकार-नाटककार और आलोचक हैं। इनमें 'केदारनाथ अग्रवाल', 'प्रभाकर माचवे', 'हरिनारायण व्यास', 'भीष्म साहनी', 'अमरकांत', 'अशोक वाजपेयी', 'परमानंद श्रीवास्तव', 'श्रीराम वर्मा', 'रमेश उपाध्याय', 'भगवत रावत', अरुण कमल के वक्तव्य इस सर्वेक्षण के अंतर्गत प्रकाशित हैं। इन वक्तव्यों से "हमें इस बात की झलक मिल जाती है कि आधुनिक हिंदी साहित्य में मार्क्स के लेखन के अध्ययन, लेखकों पर उनके प्रभाव और उनके प्रति लेखकों के दृष्टिकोण की क्या स्थिति है?"[14]

इस प्रकार 'आलोचना' पत्रिका का 'मार्क्स अंक' अपनी सामग्री के चयन और उसके प्रस्तुतीकरण के संदर्भ में अत्यंत महत्त्वपूर्ण अंक बन गया है, वहीं इस अंक के सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है कि मार्क्सवाद हिंदी साहित्य को किस रूप में प्रभावित करता रहा है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल विशेषांक-शुक्ल अंक (नवांक-73 अप्रैल-जून, 1985 और नवांक-74 जुलाई-सितं., 1985.)

हिंदी आलोचना के स्तंभ और शिखर आचार्य रामचंद्र शुक्ल के जन्मशताब्दी अवसर पर नामवर सिंह ने अपने संपादन में 'आलोचना' पत्रिका एक विशेषांक आयोजित किया। जो 'आलोचना' पत्रिका के दो अंकों नवांक-73 शुक्ल अंक-1 और नवांक-74 'शुक्ल अंक-02' के रूप में प्रकाशित है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल की विद्वता एवं आलोचकीय प्रतिभा का प्रभामंडल कितना व्यापक है 'आलोचना' पत्रिका के इस अंक के माध्यम से इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ही वह पहले और अंतिम आलोचक हैं, जिन पर 'आलोचना' पत्रिका ने दो अंक संपादित किए। अन्यथा आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी और डॉ0 रामविलास शर्मा पर केवल एक-एक अंक ही में पूरी सामग्री प्रकाशित कर दी गई है। 'आलोचना' पत्रिका की भी ''प्रारंभ में आचार्य रामचंद्र शुक्ल पर एक ही अंक के प्रकाशन की योजना थी, किंतु बाद में प्रकाश्य सामग्री की अधिकता को ध्यान में रखकर दो अंकों के प्रकाशन का निश्चय किया गया।''[15]

इस अंक में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की इतिहास-दृष्टि पर बच्चन सिंह का लेख 'आचार्य शुक्ल का 'इतिहास' पढ़ते हुए' शीर्षक से तथा जगदीश शर्मा 'आचार्य शुक्ल का साहित्य-चिंतनः विकास की दिशा' शीर्षकों से प्रकाशित हैं। विश्वंभरनाथ उपाध्याय का 'भारतीय काव्यशास्त्र और आचार्य रामचंद्र शुक्ल' विषय पर केंद्रित है। 'लोक मंगल और आचार्य रामचंद्र शुक्ल' इस विषय पर दो-दो लेखकों ने विष्णुकांत शास्त्री और रघुवंश ने अलग-अलग विचार किया है। मैनेजर पांडेय ने इसी विषय पर 'कलावाद का खंडन और लोकमंगल की स्थापना' शीर्षक से विचार किया है। रमेशकुंतल मेघ का लेख 'कतिपय योरोपीय 'वादों' पर आचार्य शुक्ल का भारतीय आलोचन' शीर्षक से प्रकाशित है। शिवकुमार मिश्र 'भक्तिकाव्य और आचार्य शुक्ल' आलेख में उनकी भक्तिकाव्य संबंधी मान्यताओं पर प्रकाश डालते हैं। 'छायावाद और रहस्यवाद की आलोचना और यथार्थवाद के लिए संघर्ष' इस विषय पर भी दो-दो आलोचकों जिनमें नित्यानंद तिवारी और परमानंद श्रीवास्तव' अपना मत प्रकट करते हुए देखे जा सकते हैं। रामस्वरूप चतुर्वेदी ने 'आचार्य शुक्ल की आलोचना-भाषा' शीर्षक से शुक्ल जी की 'आलोचना की भाषा' पर विचार किया है। इसी अंक में 'मलयज की डायरी' के आचार्य शुक्ल संबंधी अंश को भी प्रकाशित किया गया है। नामवर सिंह का अत्यंत प्रसिद्ध लेख 'महाजनो येन गतः' भी इसी अंक में प्रकाशित है। शुक्ल अंक-01 की अधिकांश सामग्री आचार्य रामचंद्र शुक्ल के साहित्यिक चिंतन पर केंद्रित है।

शुक्ल अंक-दो (नवांक-74. जुलाई-सितं. 1985) ''आचार्य रामचंद्र शुक्ल की जीवन-दृष्टि

और उनकी राजनीतिक विचारधारा पर केंद्रित है।"[16] इस अंक में शुक्ल जी का अंग्रेज़ी में प्रकाशित निबंध 'व्हाट हैज इंडिया टू डू?' का हिंदी अनुवाद प्रकाशित किया गया है। इस लेख का हिंदी अनुवाद कराने और उसे पहली बार प्रकाशित करने का श्रेय भी 'आलोचना' पत्रिका को जाता है।[17] आचार्य रामचंद्र शुक्ल राष्ट्रीय आंदोलन और राजनीति-समस्याओं पर क्या विचार रखते थे, इस विषय पर चार विद्वतापूर्ण शोधपरक आलेख प्रकाशित हैं, जिनमें वीरभारत तलवार ने 'राष्ट्रीय आंदोलन और रामचंद्र शुक्ल' शीर्षक लेख में अपने महत्वपूर्ण विचार प्रकट किए हैं। मुरलीमनोहर प्रसाद सिंह का लेख 'राष्ट्रीय आंदोलन के सांस्कृतिक आयाम और आचार्य शुक्ल' शीर्षक से तथा नंदकिशोर नवल का लेख 'राजनीतिक आंदोलन और आचार्य शुक्ल' शीर्षक से प्रकाशित हैं। कर्णसिंह चौहान का लेख 'समकालीन राजनीतिक आंदोलन और आचार्य रामचंद्र शुक्ल' भी इसी विषय पर केंद्रित है। शंभुनाथ का लेख 'आचार्य शुक्ल द्वारा दार्शनिक विचारधाराओं की आलोचना' शीर्षक से प्रकाशित है। नीलकांत ने 'आचार्य शुक्ल की विश्वदृष्टि : कितनी प्रासंगिक' शीर्षक लेख में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। वागीश शुक्ल द्वारा आचार्य शुक्ल की 'धर्म, दर्शन और विज्ञान की समीक्षा तथा नया मानववाद' लेख में तत्संबंधित मान्यताएँ प्रस्तुत की हैं। उनकी पड़ताल भी की गई है। खगेंद्र ठाकुर का लेख 'आचार्य शुक्ल और रहस्यवाद' शीर्षक से प्रकाशित है। 'आचार्य शुक्ल की मानसिक बनावट भारतीयता के संदर्भ में' शीर्षक लेख निर्मला जैन ने लिखा है। दिनेश्वर प्रसाद'लोक साहित्य और आचार्य शुक्ल' शीर्षक लेख में शुक्ल जी की लोक साहित्य संबंधी मान्यताओं को प्रकाशित करते हैं। विजयमोहन सिंह का लेख 'कलावाद का खंडन और लोक मंगल की स्थापना' शीर्षक से प्रकाशित है। ध्यातव्य है कि इसी शीर्षक से शुक्ल अंक-01 में मैनेजर पांडेय ने भी अपने विचार प्रकट किए हैं।

वस्तुतः आचार्य रामचंद्र शुक्ल जैसे हिंदी आलोचना के स्तंभ पर 'आलोचना' पत्रिका ने जितनी गंभीर और शोधपूर्ण सामग्री का प्रकाशन किया है. वह अन्यत्र दुर्लभ है। नामवर सिंह द्वारा

संपादित 'आलोचना' पत्रिका के अन्य अंकों के समान यह अंक भी 'ऐतिहासिक दस्तावेज़' है। शोध की दृष्टि से इसका महत्त्व और भी ज़्यादा है। इस अंक की सामग्री जिसमें शुक्लजी की साहित्यिक व समकालीन राष्ट्रीय आंदोलन एवं विचारधारा संबंधी मान्यताओं को एक साथ देखा जा सकता है।

प्रगतिशील लेखक संघ : अर्द्धशती पर विशेष अंक (नवांक-77, अप्रैल-जून, 1986.)

प्रगतिशील लेखक संघ के पचास वर्ष पूरे होने पर, उसका महत्त्व जानने एवं उसकी हिंदी साहित्य के विकास में भूमिका का मूल्यांकन करने के लिए नामवर सिंह ने 'आलोचना' पत्रिका का एक अंक इस पर आयोजित किया। इस अंक की सामग्री को जिस प्रकार से प्रस्तुत किया गया है, उससे प्रगतिशील लेखक संघ का पूरा इतिहास और उसके अखिल भारतीय रूप को आसानी से समझा जा सकता है। इस अंक का पहला लेख सज्जाद ज़हीर जो कि प्रगतिशील लेखक संघ के संस्थापक सदस्यों में से थे. उनकी पुस्तक 'रौशनाई' का एक अंश'प्रगतिशील लेखक संघ की पहली कांफ्रेंस' शीर्षक से प्रकाशित है। राल्फ रसेल के शोधपूर्ण आलेख का हिंदी अनुवाद 'अखिल भारतीय प्रगतिशील साहित्य आंदोलन' शीर्षक से किया गया है। इस लेख के माध्यम से यह स्पष्ट हो सकेगा कि एक विदेशी विद्वान इस आंदोलन को किस रूप में ग्रहण कर रहा है। आखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ-लंदन (1935ई.) की और 1936 में लखनऊ में हुए 'प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम अधिवेशन घोषणा-पत्रों को जो कि मूलतः अंग्रेज़ी में थे उन्हें ज्यों का त्यों मूल रूप में प्रकाशित किया गया। 'परिशिष्ट रूप में' 1936 ई. में इंग्लैंड की राजनीति-सामाजिक स्थिति और उसका अंतर्राष्ट्रीय संबंध क्या था इसे 'इंग्लैंड- 1936' शीर्षक लेख के अनुवाद से जाना जा सकता है। सैमुअल हाइंस द्वारा यह लेख लिखा गया है। नत्थन सिंह 'प्रगतिशील लेखक संघ के पचास वर्ष' शीर्षक लेख में प्र. ले. सं. का इतिहास प्रस्तुत करते हैं।

इस अंक में 'कृष्णनारायण कक्कड़', 'रमेश सिन्हा', 'कांतिचंद्र सोनरिक्सा', 'त्रिलोचन

शास्त्री' जैसे रचनाकार, कलाकर्मी, आंदोलनकर्ताओं से प्रगतिशील लेखक संघ की देश भर में विभिन्न शाखाओं में चलनेवाली गतिविधियों पर और उसके सांस्कृतिक महत्त्व पर साक्षात्कार प्रकाशित किया गया है। इस अंक की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि शिवदानसिंह चौहान का प्रगतिशील आंदोलन के संदर्भ में लिया गया वक्तव्य है; जिसको पुरुषोत्तम अग्रवाल ने 'सिंहावलोकन' शीर्षक से प्रस्तुत किया है। इसी अंक में पुरुषोत्तम अग्रवाल का ही अत्यंत चर्चित लेख 'प्रगतिशील आलोचना : बीच बहस में' प्रकाशित है, जो शिवदान सिंह चौहान और डॉ0 रामविलास शर्मा के विवाद का शोधपूर्ण आकलन उपलब्ध कराता है। इस लेख एवं वक्तव्य के माध्यम से शिवदान सिंह चौहान का पक्ष हिंदी आलोचना जगत के सामने बहुत देर से मगर ऐतिहासिक रूप से सामने आया। शिवदान सिंह चौहान की प्रगतिशील आंदोलन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका का उद्घाटन कराने में इस अंक का अविस्मरणीय योगदान है।

इसके अतिरिक्त, इस अंक में खगेंद्र ठाकुर 'प्रगतिशील आंदोलन का परिप्रेक्ष्य' शीर्षक से संपूर्ण प्रगतिशील आंदोलन का आकलन प्रस्तुत करते हैं। परमानंद श्रीवास्तव का 'भारतीय' साहित्य में प्रगतिशीलता की अवधारणा' शीर्षक से विचारयुक्त आलेख प्रकाशित हुआ है। मैनेजर पांडेय ने प्रगतिशील लेखक संघ के इतिहास पर लिखे गए इतिहासों का समीक्षात्मक अध्ययन 'प्रगतिवाद का इतिहास या कोई इतिहास कैसे न लिखें' शीर्षक आलेख में करते हैं। नामवर सिंह द्वारा 'साहित्य में प्रगतिशील आंदोलन की ऐतिहासिक भूमिका' शीर्षक लेख में डॉ0 रामविलास शर्मा की प्रगतिशील आंदोलन में क्या भूमिका रही है, इस पर प्रकाश डाला गया है।

इस प्रकार अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के पचास वर्ष पूरा होना, अपने आप में एक अत्यंत गौरवपूर्ण उपलब्धि थी। इस गौरवपूर्ण उपलब्धि का आकलन करने का कार्य 'आलोचना' पत्रिका ने अपने विशेषांक के माध्यम से किया। आलोचना पत्रिका का यह अंक प्रगतिशील लेखक संघ के ऐतिहासिक महत्त्व की दृष्टि से आत्यंतिक महत्त्व रखता है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र और मैथिलीशरण गुप्त पर संयुक्त रूप से आयोजित विशेषांक (नवांक-79, अक्तू. - दिसं., 1986.)

'आलोचना' पत्रिका का नवांक-79 (अक्टू-दिसं. 1986 ई.) भारतेंदु हरिश्चंद्र की सौवीं पुण्यतिथि और मैथिलीशरण गुप्त की जन्मशती पर आयोजित संयुक्तांक है। इन दोनों रचनाकारों पर अयोजित संयुक्तांक का पूरा परिप्रेक्ष्य 'हिंदी नवजागरण की संकल्पना' पर केंद्रित है। इस अंक को हिंदी नवजागरण पर केंद्रित विशेषांक भी कहा जा कसता है। किंतु छोटाराम कुम्हार अपने शोधकार्य 'आलोचना' पत्रिका का सर्वेक्षण और मूल्यांकन' में इस अंक की विशेषांक के रूप में चर्चातिक नहीं करते हैं। जबकि 'आलोचना' पत्रिका के विशेषांकों में यह सर्वाधिक चर्चित और विवादित अंक रहा है। इसकी चर्चा का कारण इस अंक में प्रकाशित संपादकीय और कुछ लेखों के निष्कर्ष थे। 'आलोचना' का यह संयुक्तांक ही वह अंक है जिसका संपादकीय 'हिंदी नवजागरण की समस्याएँ' लिखते हुए नामवर सिंह डॉ0 रामविलास शर्मा की नवजागरण संबंधी कई मान्यताओं का खंडन करते हैं। नामवर सिंह की हिंदी नवजागरण मान्यताएँ क्या हैं, इसी संपादकीय में हम देख सकते हैं। इस अंक की सामग्री जो कि भारतेंदु हरिश्चंद्र और मैथिलीशरण गुप्त पर प्रस्तुत की गई है, और इस अंक का संपादकीय- जो कि हिंदी नवजागरण पर केंद्रित है स्पष्ट करता है कि इन दोनों रचनाकारों का मूल्यांकन किस परिप्रेक्ष्य में होना चाहिए। और आश्चर्य नहीं कि इस अंक की प्रस्तुत सामग्री का परिप्रेक्ष्य हिंदी नवजागरण की संकल्पना ही है, इसीलिए ऊपर कहा गया है कि यह अंक 'हिंदी नवजागरण पर केंद्रित अंक' है।

इस अंक में विजयशंकर मल्ल का लेख भारतेंदुयुगीन गद्य के स्वरूप पर आधारित है और उन्होंने उसका अध्ययन 'हिंदी नई चाल में ढली : हँसमुख गद्य का विकास' शीर्षक लेख में प्रस्तुत किया है। बच्चन सिंह का लेख 'भारतेंदु हरिश्चंद्र : व्यक्तित्व के अंतर्विरोध' शीर्षक लेख में भारतेंदु हरिश्चंद्र का मूल्यांकन उनको समग्रता में रखकर करते हैं। उनके अंतर्विरोधों के रहते हुए भी उनका

व्यक्तित्व किस प्रकार अपना स्वरूप ग्रहण करता है इसे रेखांकित करते हैं। यही कार्य शिवकुमार मिश्र 'राष्ट्रीय नवजागरण और भारतेंदु' शीर्षक लेख में करते हैं। खगेंद्र ठाकुर भी भारतेंदु हरिश्चंद्र का मूल्यांकन 'राष्ट्रीय जागरण और भारतेंदु' शीर्षक लेख में करते हैं। रमेशकुंतल मेघ का लेख 'भारतेंदु हरिश्चंद्र और कुछ उपनिवेशीय सवाल' नवजागरण संबंधी अध्ययन में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाट्य साहित्य और रंगदृष्टि का मूल्यांकन तीन अलग-अलग लेखों में 'हिंदी के आदि भरत भारतेंदु हरिश्चंद्र (विश्वंभरनाथ उपध्याय)', 'भारत भाई' और भारतेंदु की रंगदृष्टि (सत्येंद्र कुमार तनेजा)', भारतमाता/ भारत जननी (श्रीनारायण पांडेय)', किया गया है। महेंद्रनाथ दुबे ने 'भारतेंदु की भाषा चेतना' को स्पष्ट करने का कार्य किया है। रघुवंश भारतेंदु हरिश्चंद्र और मैथिलीशरण गुप्त : मूल्यांकन का परिप्रेक्ष्य' शीर्षक लेख में दोनों रचनाकारों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए उनके महत्त्व को स्थापित करते हैं।

मैथिलीशरण गुप्त का हिंदी कविता के विकास में क्या योगदान है, इसे त्रिलोचन 'आधुनिक हिंदी कविता और मैथिलीशरण गुप्त का काव्य' शीर्षक लेख में स्पष्ट करते हैं। कमला प्रसाद 'मैथिलीशरण गुप्त का आत्मसंघर्ष और कविता' शीर्षक निबंध में गुप्त जी के संघर्षों को स्पष्ट करते हैं। अंबादत्त पांडे का लेख 'राष्ट्रीय भावना और गुप्त काव्य' शीर्षक से प्रकाशित है। विष्णुकांत शास्त्री 'माइकेल काव्य के अनुवादक गुप्तजी' शीर्षक के बहाने गुप्तजी के अनुवादक रूप पर प्रकाश डालते हैं। इस अंक के मैथिलीशरण गुप्त पर प्रकाशित सामग्री में पुरुषोत्तम अग्रवाल के द्वारा लिखित 'राष्ट्रकवि' की राष्ट्रीय चेतना एक उल्लेखनीय लेख है। रमेशचंद्र शाह ने गुप्तजी पर 'भारत भारती के बहाने' विचार किया है। इसी अंक में नामवर सिंह का अत्यंत महत्त्वपूर्ण लेख 'मैथिलीशरण गुप्त और आधुनिक हिंदी काव्य-भाषा का विकास।' शीर्षक से प्रकाशित है।

उपर्युक्त लेखों के विवरण एवं मूल्यांकन के संदर्भ से स्पष्ट है कि 'आलोचना' पत्रिका के इस अंक में भारतेंदु हरिश्चंद्र और गुप्तजी के मूल्यांकन का परिप्रेक्ष्य हिंदी नवजागरण की संकल्पना

ही है। इसके अतिरिक्त, इस अंक के माध्यम से परंपरा के मूल्यांकन के संदर्भ में 'आलोचना' पत्रिका की दृष्टि क्या रही है. इसे भी स्पष्टतः देखा जा सकता है।

त्रिलोचन अंक (नवांक-82, जुलाई-सिंत., 1987.)

'आलोचना' पत्रिका का नवांक-82 (जुलाई-सितं. 1987) त्रिलोचन शास्त्री की सत्तरवीं वर्षगाँठ के अवसर पर आयोजित विशेषांक है। नामवर सिंह का अत्यंत प्रसिद्ध लेख 'एक नया काव्यशास्त्र त्रिलोचन के लिए' इसी अंक में संपादकीय के रूप में प्रकाशित हुआ है। त्रिलोचन से केदारनाथ सिंह की एक विस्तृत वार्ता भी इस अंक की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

त्रिलोचन की सात कविताएँ और उनकी डायरी का पृष्ठ भी इस अंक में प्रकाशित है। मैनेजर पांडेय ने त्रिलोचन और उनकी कविता का मूल्यांकन 'जीवन की लय में मुक्ति की राग' शीर्षक लेख में किया है। परमानंद श्रीवास्तव के लेख 'शब्दों में जीवन' को अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण लेख के रूप में देखा जा सकता है। स्वप्निल श्रीवास्तव ने त्रिलोचन के दो काव्य संग्रहों 'फूल नाम है एक', और 'चैती' का समीक्षात्मक आकलन करते हुए उनकी कविता का मूल्यांकन करने का कार्य करते हैं। यदि ध्यान दिया जाए तो 'आलोचना' के नागार्जुन विशेषांक में 'त्रिलोचन' पर भी एक लेख प्रकाशित किया गया था, और 'त्रिलोचन अंक' में नागार्जुन पर विश्वनाथ त्रिपाठी का एक लेख 'जन-कवि होने का अर्थ' शीर्षक से प्रकाशित है। त्रिलोचन और नागार्जुन को लेकर हिंदी कविता में 'देशज आधुनिकता' के स्वरूप को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है। यदि इस संदर्भ में 'आलोचना' का नवांक-83 के संपादकीय को जोड़कर देखें जो कि 'कविता की दूसरी परंपरा' शीर्षक से प्रकाशित है तो त्रिलोचन और नागार्जुन का समवेत रूप स्पष्ट होकर आता है। नवांक-83 में भी 'त्रिलोचन' पर अरुण कमल का एक लेख 'त्रिलोचन का जनपद : एक नक्शा' शीर्षक से प्रकाशित है।

यदि ध्यान दिया जाए तो 'नागार्जुन' और 'त्रिलोचन' पर विशेषांक निकालने का प्रयोजन-उनकी

कविताओं में निहित प्रगतिशील चिंतन की नवीन चेतना और 'देसी', ठेठ भारतीयता का बोध जो कि आधुनिकतावादी चमक-दमक और आधुनिकतावादी चिंतन के बरक्स तो खड़ी ही है, साथ ही कविता की उस लोकधर्मी परंपराओं से जुड़ी हुई है जिसे नामवर सिंह 'कविता की दूसरी परंपरा' कहते हैं। 'त्रिलोचन' पर विशेषांक आयोजित कर नामवर सिंह उन्हें हिंदी कविता की लोकधर्मी परंपरा के विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इसके अतिरिक्त समकालीन कवियों का उनसे जुड़ाव उनके लिए 'प्रेरणा-पुरुष' के रूप में उनके महत्त्व को रेखांकित करना है।

निर्मल वर्मा विशेषांक (नवांक- 90, जुलाई-सितं., 1989.)

नामवर सिंह कथाकार निर्मल वर्मा की षष्ठिपूर्ति पर 'आलोचना' पत्रिका का एक विशेषांक आयोजित करते हैं। निर्मल वर्मा आधुनिकतावादी चिंतक और कलावादी रचनाकार के रूप में विख्यात हैं।[18] यहाँ आश्चर्य तब होता है जब हम एक तरफ 'नागार्जुन' और 'त्रिलोचन' पर केंद्रित विशेषांकों की आधुनिकतावादी चिंतन के विरुद्ध देशज आधुनिकता के महत्त्व का स्थापना की बात करते हुए देखते हैं; और दूसरी तरफ अस्तित्त्ववादी-कलावादी, आधुनिकतावादी चिंतक निर्मल वर्मा पर विशेषांक का आयोजन करते हुए देखते हैं। किंतु जब निर्मल वर्मा पर केंद्रित इस अंक के संपादकीय'एक सौंदर्योपासक संत की षष्ठिपूर्ति पर एक संवाद' देखते हैं, तो इस विशेष आयोजन का महत्त्व स्पष्ट होता है। वस्तुतः यह अंक निर्मल वर्मा के बहाने कलावादी-आधुनिकतावादी चिंतन का खंडन करता है। किंतु निर्मल वर्मा के साहित्य के तमाम अनछुए पहलुओं का भी उद्‌घाटन करता है। जिससे हिंदी साहित्य में उसका स्थायी महत्त्व बरकरार रहेगा, क्योंकि इस अंक में उनके कलावादी चिंतन का खंडन किया गया है, वहीं उनके साहित्यिक महत्त्व के उद्‌घाटन का प्रयास भी है। अर्थात् वस्तुनिष्ठता का प्रकाश यहाँ फैला हुआ है।

इस अंक में स्वयं निर्मल वर्मा का एक लेख 'साहित्यिक कृति का सत्य' शीर्षक से प्रकाशित है। कुँवर नारायण निर्मल वर्मा के गद्य का अध्ययन 'खरगोश के रोएँ जैसे गद्य को सहलाते हुए'

शीर्षक आलेख में करते हैं। रवींद्र वर्मा ने निर्मल वर्मा की कहानियों की ज़मीन का मूल्यांकन 'अपनी ज़मीन सारी ज़मीन' शीर्षक लेख में प्रस्तुत किया है। राजेंद्र यादव का लेख 'धूप के एक टुकड़े की तलाश' भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण लेख है। मधुरेश 'कहानीकार निर्मल वर्मा' का अध्ययन करते देखे जा सकते हैं। वीरभारत तलवार का अत्यंत व्यवस्थित और विस्तृत शोधालेख 'निर्मल वर्मा की कहानियों का सौंदर्यशास्त्र और समाजशास्त्र' शीर्षक से प्रकाशित है। इस लेख में निर्मल वर्मा की कहानियों का सौंदर्यशास्त्र और समाज का अत्यंत व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। नाग बोडस 'ढलान से उतरते हुए' के बहाने निर्मल वर्मा के चिंतन का उद्‌घाटन 'समय की गंदगी के बीच' शीर्षक आलेख में करते हैं। इस अंक में निर्मल वर्मा पर रामकुमार कृषक की एक कविता 'एक चिथड़ा सुख' शीर्षक से प्रकाशित है। इस कविता का शीर्षक स्वयं निर्मल वर्मा की एक कृति के शीर्षक की पैरोडी है।

रस-सिद्धांत पर विशेष सामग्री युक्त अंक (नवांक-92, जन.-मार्च, 1990.)

'आलोचना' का यह अंक (नवांक-92 जनवरी-मार्च- 1990) रस-सिद्धांत पर विशेष सामग्री युक्त अंक हैं। नामवर सिंह ने 'आलोचना' पत्रिका के माध्यम से रस सिद्धांत का नवीन संदर्भों में उपयोग, सैद्धांतिक विवेचन, आधुनिक साहित्य-चिंतन में उपयोगिता और आधुनिक संदर्भों में उसकी नवीनता को लेकर मराठी में चलनेवाले अध्ययन का हिंदी अनुवाद को इस अंक में संकलित करने का कार्य करते हैं। यह अंक 'प्राचीन भारतीय साहित्य मीमांसा' को युगांतरकारी मोड़ देने वाले मराठी विद्वान श्री दि. के. बेडेकर की स्मृति को समर्पित है। इस अंक में अशोक रा. केलकर के महत्त्वपूर्ण अध्ययन का हिंदी अनुवाद 'प्राचीन भारतीय साहित्य मीमांसा : एक आकलन' शीर्षक से प्रकाशित है। इसका अनुवाद ह. श्री. साने ने किया है। इस अंक में दि. के. बेडेकर के विस्तृत लेख मराठी भाषा से हिंदी अनुवाद करवाकर 'रस सिद्धांत का स्वरूप' शीर्षक से प्रकाशित किया गया है। इस विस्तृत लेख का अनुवाद प्रभाकर माचवे ने प्रस्तुत किया है। इसी अंक में नामवर सिंह का

विद्वतापूर्ण संपादकीय 'रस : जस का तस या बस' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है।

वस्तुतः 'आलोचन' पत्रिका का यह अंक भारतीय साहित्य मीमांसा की न सिर्फ व्याख्या करता है बल्कि उसकी आधुनिक एवं नवीन संदर्भों में क्या भूमिका हो सकती है, इसका आकलन भी प्रस्तुत करता है। 'आलोचना' पत्रिका के इस अंक का उल्लेख 'परंपरा के मूल्यांकन' के संदर्भ में भी किया जाना चाहिए।

5.2 'आलोचना' पत्रिका के महत्त्वपूर्ण आयोजन

इस उपशीर्षक के अंतर्गत हमें यह देखना है कि 'आलोचना' पत्रिका के विशेषांकों के अतिरिक्त किन रचनाकारों-आलोचको पर विशेष सामग्री अथवा 'स्मृति अंक' आदि जैसे विशेष आयोजन किए गय हैं। इसके साथ यह भी देखना महत्त्वपूर्ण होगा कि नामवर सिंह ने 'आलोचना' पत्रिका में किन विषयों पर 'संवाद' और 'विशेष सामग्री' का प्रकाशन किया है, जिससे उनके द्वारा संपादित 'आलोचना' पत्रिका का एक पूरा परिप्रेक्ष्य उभरकर आ सकेगा।

5.2.1 स्मृति-अंक और रचनाकारों-आलोचकों पर विशेष आयोजन

'आलोचना' पत्रिका का संपादन करते हुए नामवर सिंह ने कुछ रचनाकारों-आलोचकों पर स्मृति अंक अथवा उन पर 'विशेष सामग्री' का प्रकाशन किया। इसका उल्लेख निम्नवत है।

सुमित्रानंदन पंत स्मृति-अंक

नामवर सिंह ने सुमित्रानंदन पंत की मृत्यु पर 'आलोचना' पत्रिका का नवांक-43 (अक्टू-दिसं., 1977) को सुमित्रानंदन पंत स्मृति अंक के रूप में आयोजित कर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अंक में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का संस्मरणात्मक लेख 'नई चेतना का महान गायक चला गया! प्रकाशित हैं। केदारनाथ सिंह अपने 'पंतजी की परवर्ती कविताएँ' शीर्षक आलेख में उनकी बाद की रचनाओं का मूल्यांकन करते हैं। इस अंक में पंतजी की दो अप्रकाशित कविताएँ भी उपलब्ध हैं। पंतजी के उपन्यास 'देखता जो हूँ' के एक अंश को प्रकाशित किया गया है। इस

स्मृति अंक में नामवर सिंह ने पंतजी द्वारा संपादित 'रूपाभ' पत्रिका का आकलन प्रस्तुत किया गया है, जिसमें उन्होंने 'रूपाभ' के हिंदी साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान को रेखांकित करने का कार्य किया है।

पंतजी पर स्मृति अंक प्रकाशित कर 'आलोचना' पत्रिका ने छायावाद के अप्रतिम कवि के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करने का कार्य किया।

श्रीकांत वर्मा स्मृति-अंक

नामवर सिंह ने श्रीकांत वर्मा को श्रद्धांजलि देने का कार्य 'आलोचना' पत्रिका का स्मृति अंक अयोजित करते हुए किया है। 'आलोचना' पत्रिका का नवांक-78 में श्रीकांत वर्मा स्मृति-अंक (जुलाई-सितं. 1986) है। इस अंक में श्रीकांत वर्मा की चार कविताओं और डायरी के कुछ अंशों को प्रकाशित किया गया है। कुछ पत्रों का प्रकाशन 'कुछ पुराने पत्र' शीर्षक से किया गया है। वीणा वर्मा का संस्मरण 'मौत ने मुझे मृत्यु के हवाले कर दिया है'. शीर्षक से इस अंक में उपलब्ध है। इस अंक में केदारनाथ सिंह का एक लेख 'दीवार पर खड़िया से लिखा एक नाम : श्रीकांत वर्मा' में श्रीकांत वर्मा के काव्य-रचना-संसार का मूल्यांकन है। अरुणकमल का लेख 'ग. म. ध : मगध के तीन स्वर' शीर्षक से प्रकाशित है।

श्रीकांत वर्मा पर स्मृति अंक संपादित कर साठोत्तरी कविता और उसके बाद की कविताओं में मूल्यवान जोड़ने वाले लेखों का प्रकाशन कवि-प्रतिभा के महत्त्व की भूमिका को ही रेखांकित करना है।

पाश को समर्पित अंक

पंजाबी भाषा के विद्रोही और क्रांतिकारी कवि 'पाश' की हत्या कर दिए जाने पर नामवर सिंह 'आलोचना' का नवांक-85 (अप्रैल-जून 1988 ई.) कवि पाश की स्मृति में प्रस्तुत करते हैं। इस अंक में 'पाश' की 'सात कविताओं' का अनुवाद प्रकाशित है। हरभजन सोही द्वारा पाश पर लिखी

गई कविता प्रकाशित है। कवि पाश से जुड़ी हुई कुछ बातों को चमनलाल ने संस्मरण के रूप में लिपिबद्ध किया है जो 'पाश : कुछ संस्मरण' शीर्षक से इस अंक में प्रकाशित है।

गोरखनाथ पांडेय स्मृति-अंक

'आलोचना' पत्रिका का नवांक-89 (अप्रैल-जून 1989 ई.) गोरखनाथ पांडेय स्मृति-अंक के रूप में प्रकाशित है। गोरखनाथ पांडेय की आत्महत्या पर समूचा हिंदी साहित्य जगत स्तब्ध था। 'आलोचना' का एक अंक नामवर जी ने 'गोरखनाथ की स्मृति' पर आयोजित कर, गोरखनाथ पांडेय के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अंक में गोरख पांडेय की कविता 'स्वर्ग से विदाई' का प्रकाशन किया गया है। गोरखनाथ पांडेय का 'धर्म : जनता की अफीम' शीर्षक लेख भी इस अंक में प्रकाशित है। इस अंक में चमनलाल का एक संस्मरण 'गोरखपांडेय : यादों के आइने में' प्रकाशित है। और दूसरा संस्मरण बलराज पांडेय द्वारा लिखा गया हैजो 'गोरखनाथ पांडेय : बनारस के वे दिन' शीर्षक से इसी अंक में उपलब्ध है।

'आलोचना' का एक अंक नामवर सिंह ने लूसिएँ गोल्डमान की स्मृति को समर्पित किया है। नवांक-20 (जनवरी-मार्च, 1972 ई.) का संपादकीय भी उन्होंने 'लूसिएँ गोल्डमान' शीर्षक से लिखा है। तथा इसी अंक में लूसिएँ गोल्डमान के एक लेख का अनुवाद 'साहित्य का समाजशास्त्र : इतिहास, वर्तमान स्थिति और पद्धतिमूलक समस्याएँ' शीर्षक से प्रकाशित है।

'आलोचना' पत्रिका के नवांक-30 में तुलसीदास पर विशेष सामग्री प्रकाशित है। इस अंक में तुलसीदास पर तीन लेख प्रकाशित किए गए हैं। रमेशकुंतल मेघ का 'तुलसी की 'कवितावली': सामाजिक इतिहास लेखन का एक प्रामाणिक काव्य-दस्तावेज़' शीर्षक शोधालेख प्रकाशित है। सावित्री चंद्र शोभा 'तुलसी साहित्य में सामाजिक परिवेश : एक मूल्यांकन' शीर्षक से अपना अध्ययन प्रस्तुत करती है। 'परेश' का लेख 'मानस-प्रसंग' शीर्षक से इस अंक में उपलब्ध है।

नवांक-44 में सूरदास पर दो आलेख विशेष रूप से प्रकाशित किए गए हैं। एक लेख 'सूर

काव्य : प्रेरणा और स्रोत' आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के व्याख्यान का लिखित रूप है तथा दूसरा लेख-रमेश कुंतल मेघ का सूरः कौन से? और किसके?? शीर्षक से प्रकाशित है।

5.2.2 'संवाद' अथवा किसी विषय पर विशेष सामग्री

चुनाव के बाद का भारत : नामवर सिंह संपादित 'आलोचना' पत्रिका का नवांक-1 (अप्रैल-जून, 1967) में 'चुनाव के बाद का भारत' शीर्षक से एक 'संवाद' का आयोजन किया गया था। इस 'संवाद' में रामविलास शर्मा, रमेश कुंतल मेघ, शिवप्रसाद सिंह, विद्यानिवास मिश्र, राजकमल चौधरी, विष्णुप्रभाकर, भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर, मन्मथनाथ गुप्त, राजेंद्र अवस्थी, ओमप्रकाश दीपक, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की सक्रिय सहभागिता रही। इस 'संवाद' के सभी वक्तव्य इस अंक में प्रकाशित हैं।

आलोचना की भाषा

नामवर सिंह ने 'आलोचना' पत्रिका के नवांक-02 (जुलाई-सितं., 1967 ई.) में 'आलोचना की भाषा' पर एक 'संवाद' का आयोजन कराया था। जिसमें 'रामस्वरूप चतुर्वेदी', 'कृष्ण नारायण कक्कड़', 'यशदेव शल्य', 'सुरेंद्र बारलिंगे', 'सुरेश अवस्थी', 'अशोक वाजपेयी' के वक्तव्य प्रकाशित हुए हैं।

रोमांटिक बनाम आधुनिक

'आलोचना' पत्रिका के नवांक-03 (अक्टू-दिसं., 1967 ई.) में 'रोमांटिक बनाम आधुनिक' विषय पर एक 'संवाद' का आयोजन किया गया है। इस संवाद में 'रामविलास शर्मा, मुद्राराक्षस, श्रीकांत वर्मा, प्रेमप्रकाश डोभाल, भारतभूषण अग्रवाल, अजित कुमार, मुरलीमनोहर प्रसाद सिंह, नरेश सक्सेना, शमशेरबहादुर सिंह, गिरिजाकुमार माथुर, नामवर सिंह की भागीदारी रही। इसका विषय-प्रवर्तन रामविलास शर्मा ने किया, तथा 'संवाद' में उठाए गए प्रश्नों का प्रतिउत्तर भी उन्होंने दिया। इसी अंक में इस विषय से जुड़ी 'पूरक सामग्री' के रूप में'रोमांटिसिज़्म, समकालीन

कविता और समाजवाद'संवाद में 'ग्रेब्रिएल पियर्सन, डेविड क्रेग, और स्टेनली मिचेल' की मान्यताओं का हिंदी अनुवाद प्रकाशित है।

युवा लेखन पर बहस

'आलोचना' के नवांक-04 (जनवरी-मार्च, 1968) में 'युवा लेखन पर बहस' शीर्षक से एक संवाद का आयोजन किया गया है। 'बहस का प्रारूप' नामवर सिंह ने प्रस्तुत किया। इस पर सुरेंद्र चौधरी, विजयमोहन सिंह, केदारनाथ सिंह, जगदीश चतुर्वेदी और पूरनचंद्र जोशी ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किए।

कविता और राजनीति

गजानन माधव मुक्तिबोध की इक्यावनवीं जन्मतिथि पर 'आलोचना' पत्रिका ने नवांक-06 (जुलाई-सितं., 1968 ई.) में 'कविता और राजनीति' विषय पर 'संवाद' का आयोजन किया। इसमें अशोक वाजपेयी, श्रीकांत वर्मा, नेमिचंद्र जैन, रघुवीर सहाय, कृष्णनारायण कक्कड़, अज्ञेय ने अपने वक्तव्य दिए। इसके अतिरिक्त 'पूरक सामग्री' के रूप में पीटर वाइस के द्वारा लेखकों के लिए बताए गए 'दस आवश्यक निर्णय' भी प्रकाशित हैं। साथ ही रघुवीर सहाय का पूरक वक्तव्य 'तानाशाही के विरुद्ध : एक वक्तव्य' शीर्षक से उपलब्ध है।

विश्वविद्यालय और साहित्य-शिक्षा

'आलोचना' पत्रिका ने नवांक-11 (अक्टू-दिसं., 1969 ई.) में 'विश्वविद्यालय और साहित्य-शिक्षा' विषय पर एक संवाद का आयोजन किया। नामवर सिंह ने इस विषय पर संपादकीय लिखकर अपना मत प्रकट किया। और रामस्वरूप चतुर्वेदी, देवेंद्रनाथ शर्मा, विश्वनाथ त्रिपाठी, परमानंद श्रीवास्तव, रमेशकुंतल मेघ ने अपना मत प्रकट किया।

'साहित्य के समाजशास्त्र' पर विशेष आयोजन

'आलोचना' के नवांक-25 (अप्रैल-जून, 1973 ई.) में 'साहित्य के सामाजशास्त्र' विषय पर

तीन पश्चिमी चिंतकों के लेखों का अनुवाद प्रकाशित है जिसमें माल्कम ब्रेडवरी का लेख- 'साहित्य और सामजशास्त्र', रिचर्ड हागर्ट का लेख- 'साहित्यिक कल्पना और समाजशास्त्रीय कल्पना' और रेमंड विलियम्स के लेख- 'साहित्य और सामजशास्त्र' शीर्षक से अनुवाद प्रकाशित है।

'उपन्यास' पर विशेष सामग्री

नामवर सिंह ने 'आलोचना' पत्रिका के नवांक-84 (जन-मार्च, 1988 ई.) में इतिहासाचार्य एवं साहित्य मर्मज्ञ विश्वनाथ काशीनाथ राजवाड़े के 'कादंबरी' लेख का अनुवाद 'उपन्यास शीर्षक से प्रकाशित किया। इस 'उपन्यास' शीर्षक विस्तृत निबंध पर गोविंद पुरुषोत्तम देशपांडे ने अपनी टिप्पणी प्रस्तुत की है, और इसके अनुवादक ह. श्री साने ने अपनी सुचिंतित टिप्पणी भी की है।

समकालीन आलोचना पर एक संवाद

'आलोचना' पत्रिका ने 'समकालीन आलोचना' नवांक-86 (जुलाई-सित., 1988 ई.) पर एक परिसंवाद का आयोजन किया। इस आयोजन में चार लेख पढ़े गए थे। जिसमें मैनेजर पांडेय का वक्तव्य 'हिंदी की मार्क्सवादी आलोचना : कितनी मार्क्सवादी, कितनी आलोचना' शीर्षक से तथा खगेंद्र ठाकुर, विश्वनाथ त्रिपाठी का वक्तव्य'आलोचक का सामाजिक दायित्व' शीर्षक से और परमानंद श्रीवास्तव का वक्तव्य 'समकालीन रचना की चुनौतियाँ और आलोचना-कर्म' शीर्षक से 'आलोचना' पत्रिका के नवांक-86 में प्रकाशित है।

नवजागरण का भारतीय परिप्रेक्ष्य

'आलोचना' के नवांक-93 (अप्रैल-जून. 1990 ई.) में नवजागरण पर केंद्रित कुछ ऐसी सामग्री प्रकाशित है जिसमें नवजागरण का भारतीय परिप्रेक्ष्य स्पष्ट होकर आता है। इस अंक में बच्चन सिंह का लेख 'उन्नीसवीं शताब्दी का औपनिवेशिक भारत और हिंदी नवजागरण' शीर्षक से विजेंद्र नारायण सिंह का लेख 'हिंदी नवजागरण : सामंत विरोधी मूल्य और बुद्धिवाद की प्रतिष्ठा' शीर्षक में उपलब्ध है। चंद्रकांत बांदिवडेकर का लेख'महाराष्ट्र में आधुनिकता का उदय :

सांस्कृतिक चुनौती' शीर्षक से प्रस्तुत है। इसके अतिरिक्त टी. एस. कुप्पुस्वामी का लेख- 'नवजागरण का तामिलनाडू के समाज, राजनीति एवं साहित्य पर प्रभाव' इस अंक को महत्त्वपूर्ण बनाता है। वस्तुतः इन लेखों से हिंदी नवजागरण के साथ-साथ भारतीय नवजागरण का परिप्रेक्ष्य का ज्ञान होता है।

नामवर सिंह संपादित 'आलोचना' पत्रिका के विशेषांक, विशेष आयोजन और स्मृति अंक आदि के उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि 'आलोचना' पत्रिका में जिस किसी भी रचनाकार विषय पर अंक का प्रकाशन हुआ है उससे हिंदी साहित्य के संपूर्ण विकास को समझने में हमारी सहायता करता है। उन्हीं रचनाकारों, विषयों पर विशेष अंकों का आयोजन हुआ है, जिससे हिंदी साहित्य में युगांतकारी परिवर्तन को लक्षित किया जा सके। 'आलोचना' पत्रिका के माध्यम से नामवर सिंह ने ऐसे रचनाकारों-आलोचकों पर विशेषांक आदि का आयोजन किया जिससे हिंदी साहित्य जगत परिचित तो था, किंतु उनका साहित्य की परंपरा में क्या स्थान है, यह स्पष्ट नहीं कर पाता था। इस प्रकार 'नामवर सिंह संपादित 'आलोचना' के विशेषांकों के माध्यम से रचनाकारों को साहित्य के 'कैनन' में महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाया गया है, वहीं विभिन्न विषयों पर सामग्री प्रकाशित कर, परिसंवाद का आयोजन कर उस विषय से पाठकों को परिचित कराने का कार्य भी किया गया है।

संदर्भ :

1. सिंह, नामवर. आत्मकथा-2. "रचना और आलोचना के पथ पर". 'तद्भव' (अंक-03) अप्रैल-2000 : पृ. सं. 15.
2. दृष्टव्य- 'आलोचना' नवांक- 08 में जनवरी-मार्च. 1969 ई.) प्रकाशित इस कविता की पाद टिप्पणी। पृ. सं. 03.
3. सिंह, शमशेरबहादुर. "ग़ालिब मेरी दृष्टि में". 'आलोचना' (नवांक-08) जनवरी-मार्च, 1969 : पृ. सं. 4.
4. दृष्टव्य- मोतीलाल रैना का लेख "मार्क्सवादी समीक्षा : एक समसामायिक परिदृश्य पर कुछ टिप्पणियाँ", 'आलोचना' (नवांक-42), जुलाई-सितं. 1977.
5. दृष्टव्य नामवर सिंह का साक्षात्कार. "विवेक की पक्षधरता". साक्षात्कारकर्ता अशोक वाजपेयी, सुदीप बनर्जी, उदय प्रकाश. संकलित- संपा. 'कहना न होगा', संपा. समीक्षा ठाकुर. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 1994. पृ. सं. 29 का वक्तव्य.
6. दृष्टव्य नामवर सिंह का साक्षात्कार. "आधी सदी : आधा साहित्य" कहना न होगा, संपा. समीक्षा ठाकुर. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 1994. पृ. सं. 233 का वक्तव्य.
7. सिंह, नामवर. आत्मकथा-2. "रचना और आलोचना के पथ पर". 'तद्भव' (अंक-03) अप्रैल-2000 : पृ. सं. 15.
8. दृष्टव्य : नामवर सिंह का संपादकीय जिसमें आधुनिकतावादी, कलावादी, उदारतावादी, मार्क्सवादी और गाँधीवादी प्रेमचंद को किस रूप में चित्रित करते हैं उसे स्पष्ट किया गया है। 'आलोचना' प्रेमचंद्र-स्मृति अंक (नवांक-51-52) अक्टू. 1979-मार्च 1980 ई. संपादकीय वक्तव्य.
9. सिंह, नामवर. संपादकीय. "विगत महत्ता और वर्तमान अर्थवत्ता". 'आलोचना' (नवांक-51-52). अक्टू- 1979 से मार्च 1980 तक : पृ. सं. 04.
10. दृष्टव्य. आशुतोष कुमार की पुस्तक समकालीन कविता और मार्क्सवाद : में पृ. सं. 73-76. पर उल्लिखित नागार्जुन अंक का विवेचन.
11. दृष्टव्य. डॉ0 रामविलास शर्मा पर आयोजित 'आलोचना' पत्रिका का अंकजिसमें 'घर की बात' के आरंभ से पूर्व डॉ0 रामविलास शर्मा का वक्तव्य- 'आलोचना' (नवांक-60-61). जनवरी-जून 1982 : पृ. सं. 05.

12. दृष्टव्य छोटाराम कुम्हार का प्रकाशित शोध कार्य 'आलोचना' संदर्भ कोश : ('आलोचना' पत्रिका का सर्वेक्षण और मूल्यांकन). जोधपुर : राजस्थानी ग्रंथागार. 1999. पृ. सं. 49. इस पृष्ठ पर 'उपन्यास अंक' को 'समीक्षा अंक' के अंतर्गत समाहित करते हैं, उसे 'उपन्यास' पर केंद्रित स्वतंत्र विशेषांक के रूप में गणना नहीं करते हैं।

13. "मार्क्स और हिंदी के रचनाकार : एक सर्वेक्षण" योजना के संदर्भ में नंदकिशोर नवल का वक्तव्य 'आलोचना' (नवांक-09) जुलाई-सितं., 1984 : पृ. सं. 61.

14. वही. पृ. सं. 61.

15. 'आलोचना' नवांक-73 (अप्रैल-जून- 1985) के पहले पृष्ठ पर प्रकाशित आयोजकीय वक्तव्य 'यह अंक' की टिप्पणी से उद्धृत.

16. वही.

17. वही इस वक्तव्य में स्पष्टतः लिखा गया है कि 'उसमें कुछ ऐसी सामग्री दी जा रही है, जो अभी तक कहीं प्रकाशित नहीं हुई।' यदि ध्यान दें तो इस लेख के हिंदी अनुवाद के अलावा आचार्य शुक्ल का कोई भी अन्य लेख आदि इस अंक में प्रकाशित नहीं है। इसी कारण से यह कहा गया है कि हिंदी में यह लेख 'आलोचना' पत्रिका ने पहले पहल छापा है।

18. दृष्टव्य. 'आलोचना' पत्रिका का नवांक 90 (निर्मल वर्मा विशेषांक) का संपादकीय वक्तव्य।